मासिक

jaihaatkeshvani.com

जय हाटकेश वाणी

अगस्त 2016 वर्ष : 11 अंक : 04

स्व.मुखिया श्री कृष्णदासजी मेहता

श्री गोवर्द्धननाथ मंदिर हवेली शाजापुर (म.प्र.)
के पौत्र

चि. अनिरुद्ध मेहता

(सुपुत्र- बृजगोपाल मेहता)
(संभागीय उपायुक्त टी.डब्ल्यू.डी.)

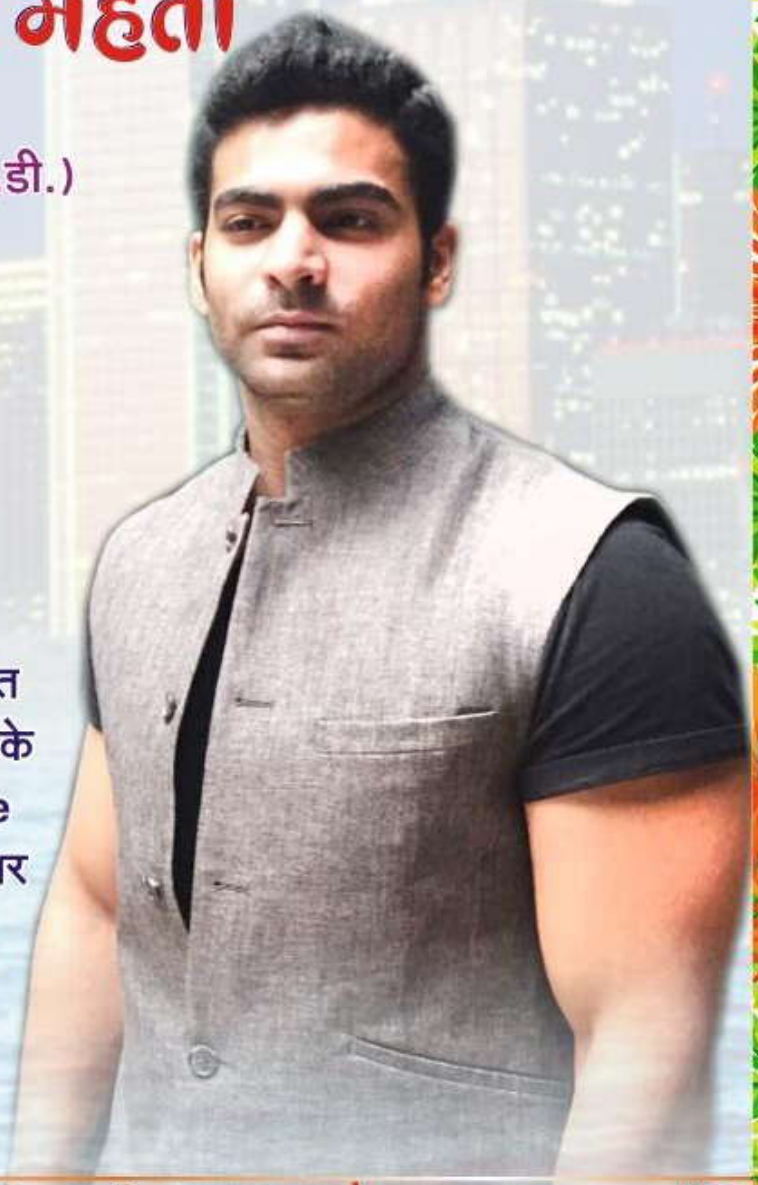

द्वारा dallas texas USA से MS की डिग्री उच्च अंकों से प्राप्त करने और वर्तमान में अमेरिका के बोस्टन शहर में Collaberative Consulting में कार्यरत होने पर समस्त मेहता परिवार शाजापुर की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।
9977979292, 9826424424

संस्थापक

श्री शिवप्रसादजी शर्मा श्रीमती प्रभा शर्मा

प्रेरणा स्त्रोत

श्री गोवर्धनलालजी मेहता

श्री विष्णुप्रसादजी नागर

संरक्षक

पं.श्री कमलकिशोर नागर, सेमली
पं.श्री आर.के.झा, कोलकाता
पं.श्री पुरुषोत्तम (परेश) पी.नागर, मुम्बई
पं.श्री महेन्द्र नागर, बैंगलौर
पं.श्री नवरत्न व्यास, हैदराबाद
पं.श्री हरिप्रसाद नागर, अकलेरा
पं.श्री सुभाष व्यास, भोपाल
पं.श्री ओमप्रकाश मेहता, भोपाल
पं.श्री सुनील मेहता, मन्दसौर
पं.श्री सुरेन्द्र मेहता (सुमन) उज्जैन
पं.श्री कृष्णानंद मेहता, खण्डवा

प्रधान सम्पादक
सौ.संगीता दीपक शर्मा

सम्पादक
सौ.दिव्या अमिताभ मंडलोई
सौ.दमिता नवीन झा
सौ.आभा विजयशंकर मेहता

विज्ञापन
पवन शर्मा-9826095995

झरोखा

श्री भगवती मंडल का स्वर्ण जयंती वर्ष 09

मंडलोई फाउंडेशन में विविध आयोजन 12

संगीत संध्या ने तीन घंटे बांधे रखा 15

समृद्धि का सूत्र 23

जय हाटकेश वाणी

सम्पर्क- अवन्तिका परिसर, 20, जूनी कसेरा बाखल,
(खजूरी बाजार), इन्दौर-452002 मो. 9425063129

website : www.jaihaatkeshvani.com, / E-mail : jayhotkeshvani@gmail.com / manibhaisharma@gmail.com

मूल्य 10/- रुपये

सहयोग देने की आदत डालिये...

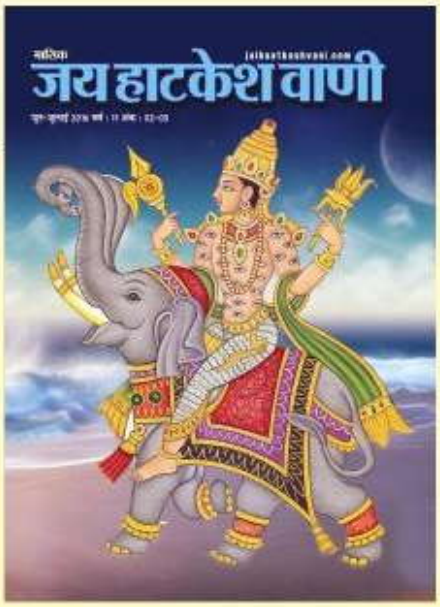

महंगाई के इस दौर में सामाजिक गतिविधियों का निष्पादन टेढ़ी खीर होता जा रहा है, सामाजिक आयोजन हो, उत्थान हो या निर्माण हो अर्थाभाव में सब कुछ ठप सा पड़ा है, अब समय आ गया है कि समाजजन देने की आदत डाले, न केवल धन-दान, बल्कि तन, मन का सहयोग भी तथा कार्यकर्ताओं को संबल भी ज्यादा से ज्यादा दें, अन्यथा सामाजिक गतिविधियाँ समाप्त प्रायः हो जाएगी और

उसके साथ हमारा अस्तित्व भी। समाज संगठन तथा उत्थान केवल पदाधिकारियों की जिम्मेदारी नहीं है, अपितु पूरे समाज की है, तथा जब तक समाजजनों का पूर्ण सहयोग नहीं मिलेगा तब तक सब कुछ अधूरा ही अधूरा है। सम्पूर्ण सहयोग देना चाहिए और आर्थिक अधिक से अधिक। अपना सहयोग देना है तो आगे बढ़कर देना चाहिए, किसी के लेने आने का इंतजार क्यों? आखिर हमारा भी समाज के प्रति ऋण है जवाबदारी है, इसलिए देने की भावना अधिकाधिक हो तथा पाने की कम से कम जिस प्रकार भगवान की भक्ति हम बगैर किसी लालसा के करते हैं उसी प्रकार सामाजिक सहयोग भी बगैर लालसा के होना चाहिए। कर्त्तव्य करने के बाद अधिकार अपने आप मिल जाता है। मांगना नहीं पड़ता। उसी प्रकार समाज के लिए भी देने की भावना सर्वोपरी है। समाज कार्य के लिए आप देने निकले हो या कोई मांगने आया है तो वहाँ आशा एवं सामर्थ्य से ज्यादा देने का प्रयत्न करना चाहिए। तभी समाज का उत्थान संभव है। हमारे सबके मिलने से समाज संगठन बनता है तथा हम सबके सहयोग से समाज की शक्ति एवं यश बढ़ता है। अतः सदैव संगठन को मजबूत बनाने तथा उसे यशस्वी बनाने के काम में अधिकाधिक सहयोग करें, सामर्थ्य से ज्यादा दें- धन... उत्साह... संबल... एवं प्रशंसा... सब कुछ अधिकाधिक।

-सम्पादक

सदस्यता-नवीनीकरण आवेदन पत्र

मैं ....

डाक का पूरा पता (पिनकोड सहित) ....

....

मासिक **जय हाटकेश वाणी** का आजीवन सदस्य बनना चाहता हूँ। जिसके लिए निर्धारित आजीवन सदस्यता शुल्क 550 रु. नगद/चैक/ड्राफ्ट या आपके बैंक अकाउंट द्वारा निम्नलिखित पते पर भेज रहा हूँ। मैंने यह शुल्क आपके खाते 'जय हाटकेश वाणी' केनरा बैंक शाखा एम.जी. रोड़, (गोराकुण्ड) इन्दौर में खाता क्रमांक - 0325201004027 में जमा किया है।

सम्पर्क- **जय हाटकेश वाणी**, 20 जूनी कसेरा बाखल (खजूरी बाजार), इन्दौर-452002 मो. 9926285002, 9926563129 www.jaihaatkeshvani.com

E-mail : jayhotkeshvani@gmail.com / manibhaisharma@gmail.com

उत्साह विहिन उत्सव

समाज संगठन में पदाधिकारियों का आपसी सामंजस्य एवं संगठन को चलाने के महत्वपूर्ण तत्व धन का सदैव अभाव बना रहता है। उसके बावजूद पदाधिकारियों को प्रशंसा के बजाय आलोचना अधिक सहना पड़ती है।

नवरात्रि महोत्सव आ रहा है और पदाधिकारियों के जागने का अवसर भी, प्रतिवर्ष की तरह वे ही सहयोगी, वे ही समाजजन जुटेंगे, कोई नयापन नहीं वही एकरसता। न समाजजनों में सहयोग का उत्साह है न उपस्थिति का, जबकि उत्सव का पर्याय है उत्साह। अगर धार्मिक आयोजन की बात है तो भक्ति का उत्साह हो, आपस में मेलजोल की उत्सुकता हो, सहयोग का उत्सर्जन हो, प्रसन्नता का सृजन हो तभी आयोजन की सार्थकता है, तभी पदाधिकारियों एवं समाजजनों की सार्थकता है, उत्साह विहिन उत्सव करने से पहले तो हम सब कुछ विचार विमर्श कर लें तो बेहतर है।

दरअसल समाज की गतिविधियों का संचालन आज के महंगाई भरे युग में कठिन चुनौती हो गई है। कोई भी कार्यक्रम हो उसके लिए पदाधिकारियों को एवं सक्रिय कार्यकर्ताओं को घर-घर जाकर धन संचय करना पड़ता है। वे तमाम परेशानियों के बावजूद यह कार्य करते हैं। आयोजन की तैयारियों पर अपना श्रम एवं समय भी व्यय करते हैं, परन्तु समाज के लोगों की पर्याप्त उपस्थिति न होने से आयोजन करने का उद्देश्य सदैव अधूरा रह जाता है। यहाँ कुछ प्रश्न उत्पन्न होते हैं कि क्या समाज के लोग आयोजन नहीं चाहते? क्या समाज में वर्षों से नियमित किए जा रहे आयोजनों को जारी रखना जरूरी है? क्या इस बारे में सभी समाजजनों से राय लेकर आयोजन के बारे में सहमति बनाई जाए? जवाब यह है कि बड़े शहरों में समाजजनों के आपसी मेलजोल का एकमात्र उपाय ऐसे आयोजन ही है। या शादी ब्याह आदि। तो फिर समाजजन इन कार्यक्रमों में उत्साह क्यों नहीं दिखाते? क्या सामाजिक आयोजन करना पदाधिकारियों का ठेका है या प्रतिबद्धता है समाजजनों की कोई जिम्मेदारी नहीं। और अगर सामाजिक आयोजन सबकी जरूरत है तो सहयोग की कमी क्यों है? दरअसल वर्तमान समय में हमारी पहचान एवं उत्थान के लिए हमारा एकजुट होना तथा उस एकजुटता का प्रदर्शन अत्यंत आवश्यक है।

इसी तारतम्य में ही नागर ब्राह्मण समाज में भी विभिन्न इकाईयां कार्यरत हैं, परन्तु सबसे बड़ा अभाव इनमें उत्साह का है। वर्षों से जो कार्यक्रम आयोजित हो रहे हैं उन्हें मजबूरन करने का पदाधिकारियों पर दबाव है तथा एक बनी-बनाई व्यवस्था के अंतर्गत गिने-चुने लोग शहरभर से धनसंग्रह एवं अन्य तैयारियां जुटाते हैं, इसमें उत्साह के बजाय मजबूरी ज्यादा दिखाई देती है। न पदाधिकारियों में उत्साह है न समाजजनों में। नवरात्रि महोत्सव आ रहा है और पदाधिकारियों के जागने का अवसर भी, प्रतिवर्ष की तरह वे ही सहयोगी, वे ही समाजजन जुटेंगे, कोई नयापन नहीं वही एकरसता। न समाजजनों में सहयोग का उत्साह है न उपस्थिति का, जबकि उत्सव का पर्याय है उत्साह। अगर धार्मिक आयोजन की बात है तो भक्ति का उत्साह हो, आपस में मेलजोल की उत्सुकता हो, सहयोग का उत्सर्जन हो, प्रसन्नता का सृजन हो तभी आयोजन की सार्थकता है, तभी पदाधिकारियों एवं समाजजनों की सार्थकता है, उत्साह विहिन उत्सव करने से पहले तो हम सब कुछ विचार विमर्श कर ले तो बेहतर है।

-संगीता दीपक शर्मा

सफलता के शिखर को स्पर्श करना, उस पर आरूढ़ एवं प्रतिष्ठित होना हर कोई चाहता है। सबकी उत्कट इच्छा होती है कि वह भी ऊँचाइयाँ छुए, उसका भी नाम हो। किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति उसके लिए नियोजित, निरंतर लगन, अथक चेष्टा एवं अन्य कईं बातों पर निर्भर करती है। इन सबका पालन कर सफलता के शिखर पर पहुँचा जा सकता है, परन्तु ध्यान रहे कि शिखर पर कोई स्थाई आवास नहीं बना सकता है।

सफलता पाने से भी कठिन कार्य है सफल बने रहना। जीवन में सफलता पाने के लिए सावधानी को अपना बड़ा भाई, धैर्य को अपना घनिष्ठ मित्र और अनुभव को अपना परामर्शदाता बनाना चाहिए।

सफलता प्राप्त करने के लिए अपनी निर्बलताओं के प्रति जागरुक रहना अत्यंत आवश्यक है। सफलता के मार्ग में प्रलोभन और आलस्य ये दो प्रमुख शत्रु हैं। सफलता में आनंद मनाने के साथ ही असफल होने पर भी अविचलित रहने का साहस होना चाहिए। जिसे सफलता का सुख और असफलता का दुख प्रभावित नहीं करता वह सफलता के चरम पर पहुँचता है। सफलता को शांति के साथ प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को सफलता के प्रयासों के साथ ध्यान, योग, व्यवस्थित जीवनशैली अपनाना चाहिए।

समाज में आजकल सफलता की भी प्रतियोगिता हो रही है। हम और अपने आप को बढ़ा-चढ़ा कर प्रस्तुत करना तथा अपनी संतानों की सफलता ढिंढोरा पीटना है, लेकिन वास्तविक रूप से सफल कौन है? वह इस ऊँचाई पर पहुँचा और उसने इस सफलता के लिए क्या-क्या प्रयास किए और सत्य में वह उसके लायक था या नहीं, कईं प्रश्न मेरे मन में आते-जाते हैं। आजकल जीवन दिखावे का ज्यादा हो गया है।

जीवन मूल्यों पर आधारित नहीं रहता है। व्यक्ति की सफलता में इन जीवन मूल्यों का बहुत योगदान रहता है। महत्वपूर्ण यह है कि क्या अपनी सफलता के साथ वह जीवन मूल्यों को भी साथ पाता है।

सौ. आभा मेहता, उज्जैन

सफलता समर्पण मांगती है...
समय का समर्पण...
ये जितना ज्यादा होगा
सफलता उतनी करीब
आती जाएगी...
आलसी सफल होते, तो
दुनिया में कोई गरीब
नहीं होता...

दूसरों की अपेक्षा आपको
सफलता यदि देर से मिले
तो निराश नहीं होना चाहिये।
यह सोचिये कि मकान
बनने से ज्यादा समय
महल बनने में लगता है...

थोड़ा रुकिए, अपने लक्ष्यों
और उद्देश्य को दोहराइए,
जो सबसे जरुरी हो,
उसे सबसे पहले कीजिए...
एक समय में एक ही
काम कीजिए...

वडनगरा नागर समाज बांसवाड़ा में ऐतिहासिक खोजों की जानकारी

किसी भी पुरातत्व संबंधी सामग्री को हम चार भागों में बांट सकते हैं। (1) शिलालेख, (2) मुद्राएँ, (3) ताम्रपत्र, (4) स्मारक, अपने इतिहास को जानने के लिए सुविधा की दृष्टि से हम इसे निम्न भागों में भी बांट सकते हैं। (1) पुरातत्व संबंधी सामग्री, (2) ऐतिहासिक साहित्य, (3) पुरालेखन सामग्री, (4) आधुनिक इतिहासकार।

किसी ज्ञाति का गौरव उसके इतिहास से जाना जाता है। वडनगरा नागर समाज बांसवाड़ा के पूर्वजों ने सम्पूर्ण बागड़ क्षेत्र (बांसवाड़ा-डूंगरपुर) में कई मंदिर, वापिकाएँ (बावड़ियाँ), कुएँ, धर्मशालाओं का निर्माण कराया था जिसकी स्मृति के लिए उक्त स्थानों पर शिलालेख स्थापित किए थे।

आज करीब 500-600 वर्ष बाद नागर समाज एवं राजस्थान, पुरातत्व विभाग के पास ऐसी कोई सूची नहीं है, जिससे ज्ञात हो सके कि प्राचीन समय में वागड़ क्षेत्र के विकास में नागर ज्ञाति का क्या योगदान रहा है। इस चुनौतीपूर्ण कार्य करने की जिम्मेदारी बाँसवाड़ा वडनगरा नागर समाज की युवा कार्यकारिणी ने उठाया, इसके लिए समाज के शिक्षाविद् इतिहासकार स्व.डॉ.शंकरलालजी त्रिवेदी के 'हेमसुधा ग्रंथ' व उनके द्वारा अमर आजादी में लिखे गए लेख एवं साहित्यकार स्व.हिम्मतलालजी त्रिवेदी द्वारा रचित भक्तमाल ग्रंथ राजस्थान के इतिहासकार स्व.गौरीशंकर ओझा द्वारा लिखित बांसवाड़ा डूंगरपुर का इतिहास आदि पुस्तकों के आधार पर नागर ज्ञाति के इतिहास की जानकारी प्राप्त की गई। "Survey and Research Methodolgy" की सहायता से प्राचीन

शिलालेखों के फोटो खींचकर कम्प्यूटर द्वारा इन्हें बड़ा कर के पढ़ा गया और इसे नये रूप से शिलालेखों को प्राचीन स्थानों पर स्थापित किया गया है। जिससे समाज की भविष्य की पीढ़ियों को अपनी संस्कृति गौरवशाली इतिहास की जानकारी मिल सके। वे अपने इतिहास पर गर्व कर सके।

वर्तमान में निम्न मंदिरों की जानकारी प्राप्त हो चुकी है एवं वहाँ नये रूप में शिलालेख स्थापित किये जा चुके हैं।

(1) नीलकंठ महादेव मंदिर नागरवाड़ा- यह मंदिर महारावल श्री प्रतापसिंहजी (विस. 1598-1630) के काल में पञ्च द्रविणान्तर्गत आभ्यन्तर वडनगरा नागर ज्ञाति के श्रीमदाजानी द्वारा महारावल रक्तपित्त रोग की मुक्ति देकर विस. 1599 (1542 ई.) में निर्मित किया था। महारावल श्री लक्ष्मणसिंहजी (विस. 1900-1961) के काल में

प्रस्तावना- डूंगरपुर (राज.) का हाटकेश्वर मंदिर नागर समाज ने अपनी सक्रियता से बचा लिया था भिलुडा का राममंदिर हमारी आस्था का केन्द्र भी स्थानीय समिति संचालित कर रही है और व्यवस्था से संतोष है। सद्गुरु केशवाश्रमजी ने परसोलिया की प्राकृतिक रमणीय स्थल पर जिस सर्वेश्वर महादेव मंदिर की स्थापना की थी और राजस्व विभाग के रिकार्ड में भी 60-70 बीघा जमीन मंदिर की है। लोग खेती कर रहे हैं मगर मंदिर को आय नहीं हो रही।

मानदी नदी के इस छोर पर गुरुदेव ने जल समाधी ली और बड़ी शीला पर उनके चरण अंकित हो गये उसके आसपास के घाटो पर विधायक मद से पुनः निर्माण और सौन्दर्यीकरण करवा दिया गया, मगर स्थान की महत्ता को भूला दिया है कईं लोग उस जमीन पर धर्मशाला बनाने के नाम पर उसे हस्तगत करने के प्रयास में लगे हुए हैं। वहाँ भी स्थानीय लोगों के साथ नागर समाज को जोड़ते हुए समिति बनाकर उसके विकास के प्रयास किये जा रहे हैं। आनन्देश्वर महादेव ने जहाँ पिछले वर्ष आकाशीय बिजली का प्रकोप सहन किया था मगर समाचार पत्रों में वडनगरा नागर समाज के मंदिर जैसा कोई उल्लेख नहीं था ना ही मंदिर पर ऐसा कोई संकेत था। नागर समाज की कईं परिसम्पत्तियाँ है पिछले काल खण्ड में समाज के लोगों की निष्क्रियता से अतिक्रमण की भेंट चढ़ गये और कुछ पर संकट के बादल मण्डरा रहे हैं। समाज की मांग को देखते हुए वर्तमान नागर समाज की युवा कार्यकारिणी के सदस्य श्री दिगीश नागर ने इतिहास खंगालने का गुरुत्तम भार स्वीकार किया है वह स्तुत्य है श्री दिगीश नागर पेशे से गणित के अध्यापक हैं।

उन्होंने पुनःशोध सर्वेक्षण एवं Rerearch Methodology का उपयोग कर उल्लेखनीय कार्य किया है। अपने तन-मन-धन और समर्पण के साथ कुछ भामाशाहों की मदद से इस चुनौती पूर्ण कार्य को पूर्णता की ओर ले जाने के लिए वे संकल्पित हैं। प्रस्तुत है वडनगरा नागर समाज की ऐतिहासिक खोजों की जानकारी।

-प्रमोदराय झा बांसवाड़ा

विस. 1902 (1845ई.) में वडनगरा नागर ज्ञाति के सद्गुरु स्कन्दावतार श्री केशवाश्रमजी महाराज इसी मंदिर में पधारे तथा नागर ज्ञाति के लोगों को वेदाध्यन, शैवमंत्रों का उपदेश दिया एवं नागर ज्ञाति के बारे में निम्न श्लोक द्वारा परिचय दिया।

'गौत्र शर्मा ऽ वंटकस्य, कुलश्च प्रवरः शिवः।

वेदः गणपति देवी, नव जानन्ति नागराः।।

तथा इसी मंदिर में महारावल श्री लक्ष्मणसिंहजी ने सद्गुरु केश्वाश्रमजी गुरु महाराज का शिष्यत्व स्वीकार किया। इसी मंदिर में हाटकेश्वर जयंती पर आरती एवं अनुष्ठान कार्यक्रम किये जाते थे। जो पृथक हाटकेश्वर मंदिर की स्थापना के बाद भी जारी है।

(2) श्री रुद्रेश्वर महादेव मंदिर नागरवाड़ा- यह मंदिर महारावल श्री पृथ्वीसिंहजी प्रथम (विस. 1803 से 1840) के काल में राजतलाव की मुख्य पाल से प्राप्त शिलालेख से प्राप्त इसका निर्माण भाद्रपद सुदी 13 विस. 1812 (18 सितम्बर 1755 ई.) में नागर ज्ञाति के श्री उत्तमचन्दजी पण्डया द्वारा स्थापित किया गया। इसी दिन श्रीमंत ने राजतलाव की पाल निर्माण की नींव रखी एवं इसका विस्तार नागर ज्ञाति के श्री रंगेश्वर जानी ने किया इसी राजतलाव के दूसरे छोर पर भगवान दासजी की छत्री है जिसका संचालन नागर समाज की पृथक ट्रस्ट द्वारा किया जाता है और संरक्षण आज समय की मांग बनता जा रहा है।

(3) श्री आनन्देश्वर महादेव मंदिर यह मंदिर महारावल भीमसिंहजी (विस. 1762-1769) के काल में मंदिर की वापिका (बावड़ी) से प्राप्त शिलालेखानुसार इस मंदिर की स्थापना वैशाखसुदी 7 विस. 1766 (1 मई 1709 ई.) में वडनगरा नागर ज्ञाति के श्री केशवजी झा उनकी पत्नी गंगा, पुत्र पृथ्वीदास द्वारा स्थापित किया गया साथ ही उन्होंने यहाँ बावड़ी व धर्मशाला का भी निर्माण कराया था।

आगे श्री सद्गुरु केश्वाश्रमजी द्वारा स्थापित पारसोलिया में सर्वेश्वर महादेव मंदिर, श्री दुर्लभरामजी गुरुमहाराज, श्री दयानिधिजी, पड़ौली कला राठौड़ तोरणवाला मंदिर, हाटकेश्वर महादेव मंदिर, गोवर्धननाथ मंदिर आदि मंदिरों की इतिहास की जानकारी जुटाई जा रही है और वहाँ भी नये रूप में शिलालेख स्थापित किए जाएंगे।

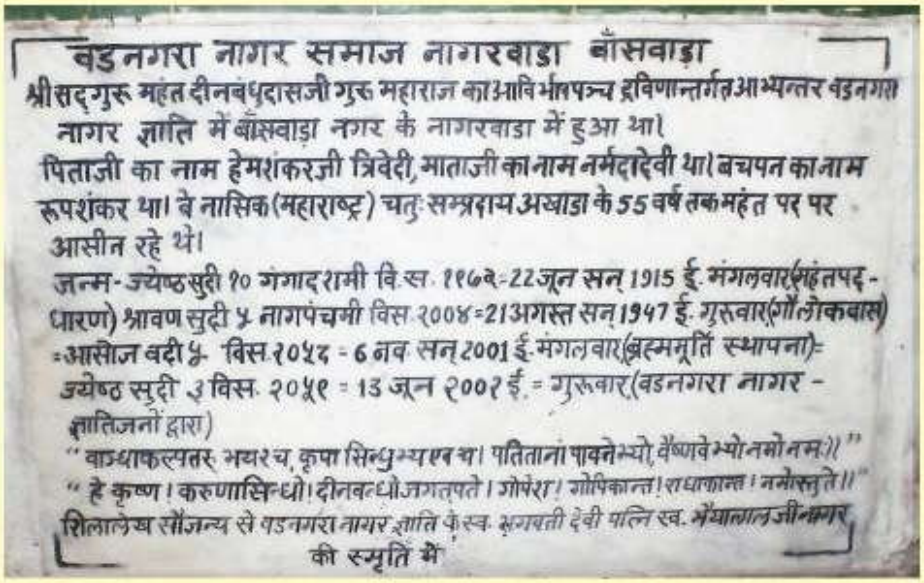

इस कार्य को पूर्ण करने में युवा कार्यकारिणी के सदस्य भी दिगीश नागर जो पेशे से गणित के अध्यापक हैं उन्होंने पुनः शीघ्र सर्वेक्षण एवं Research Methodology) का उपयोग कर उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं। दिगीश नागर के तन-मन-धन व समय तथा कुछ भामाशाहों की मदद से यह चुनौती पूर्ण कार्य अपनी पूर्णताः की ओर अग्रसर हो रहा है।

-दिगीश कुमार
ज्वालामुखी मंदिर गली, नागरवाड़ा, बांसवाड़ा
मो. 9461226966

इसी माह में 49वें वर्ष का लेखा-जोखा प्रस्तुत करने के पश्चात् नई कार्यकारिणी के गठन के साथ ही स्वर्ण जयंती पर पुनः सहस्त्रचंडी और कईं बड़े कार्यक्रमों का आगाज होगा और यह मंडल इसी तरह उत्तरोत्तर प्रगति करता रहे यही मंगल कामना की जाएगी तथा संरक्षक महंतजी गोलोकवास होने के बावजूद हमें प्रेरणा देते रहेंगे।

श्री भगवती मण्डल नागरवाड़ा का स्वर्ण जयंती वर्ष

श्री भगवती मण्डल नागरवाड़ा बांसवाड़ा ने अपने संरक्षक ब्रह्मलीन चर्तुसम्प्रदाय अखाड़ा नासिक के महंत श्री दीनबंधुदासजी महाराज के जन्म शताब्दी वर्ष में अपना 49वाँ वार्षिक आयोजन पूर्ण कर स्वर्ण जयंती वर्ष में प्रवेश किया। 9 जुलाई 1967 की आषाढ़ शुक्ल द्वितीया 2024 को आचार्यकुल के साथ नागर समाज के संस्कार, परम्परा और संस्कृति को अक्षुण्ण बनाए रखने के उद्देश्य से इसकी स्थापना की। आचार्य स्व.श्री भजामी शंकरजी झा के साथ धनपतराय झा, श्री ललित किशोर त्रिवेदी और दुर्लभरायजी त्रिवेदी ने अपनी 17 सदस्यों की टीम के साथ प्रत्येक माह के प्रथम रविवार को किसी देवी के मंदिर में चंडी पाठ के सस्वर सामूहिक पाठ करने का श्री गणेश किया और स्थापना दिवस पर इन्हीं पाठियों के सहयोग से शतचंडी महायज्ञ के आयोजन का संकल्प लिया।

संध्या पूजा और रुद्राभिषेक में अभिरुचि रखने वालों ने उसको सीखने में भी अपनी अभिरुचि दिखाई। स्थापना वर्ष के उन 17 सदस्यों की कर्मठता से वर्तमान में 170 सदस्यों की टीम तैयार हो गई है। जिसने 4 जुलाई 2016 सोमवार को शुद्धि एवं जप से प्रातः 8 बजे कार्यक्रम को प्रारम्भ किया। 5 जुलाई 2016 मंगलवार को पुनः 8 बजे से सामूहिक पाठ, सायं 6 बजे गंगाजल यात्रा और आरती प्रसाद का आनन्द लिया। 6 जुलाई 2016 बुधवार को पुनः 8 बजे से सामूहिक पाठ 12.30 से आहुतियों के साथ कन्या पूजन के पश्चात् 6.30 बजे महायज्ञ की पूर्णाहुति आरती के पश्चात भगवान जगन्नाथजी की यात्रा का आयोजन उत्साह से किया और महाप्रसादी ग्रहण कर आचार्य श्री इंद्रशंकरजी से आशीर्वाद प्राप्त कर कार्यक्रम को उत्साह से किया और महाप्रसादी ग्रहण कर आचार्य श्री इंद्रशंकरजी से आशीर्वाद प्राप्त कर कार्यक्रम को विराम दिया। बांसवाड़ा में जगन्नाथजी का मंदिर है, परन्तु रथयात्रा की परम्परा नहीं थी। हमारे संरक्षक के सुझाव पर रथ लेकर जगन्नाथ मंदिर जाना आरम्भ किया और जगन्नाथ मंदिर वालों को भी रथ यात्रा निकालने हेतु प्रेरित किया।

49 वर्षों की गतिविधियों में कईं चौंकाने वाले निर्णय भी लिए गए। चंडीपाठ की प्रस्तकें गोरखपुर गीता प्रेस से सस्ते दामों में उपलब्ध हो जाती है, परन्तु संरक्षक महंतजी की प्रेरणा से स्थापना दिवस के 10वें वर्ष में 10 हस्तलिखित पोथियों और 30वें वर्ष में पुनः 10 पोथियों को तैयार कर पुजित कर उसे प्रयोग में लाया गया। बांसवाड़ा के विभिन्न मंदिर में चंडीपाठ का आयोजन किया जाता था, मगर स्थापना के दसवें वर्ष में बांसवाड़ा से उज्जैन की पदयात्रा कर हरसिद्धि माता के मंदिर में कार्यक्रम का आयोजन किया। स्थापना के 20वें वर्ष में संरक्षक महंतजी के सानिध्य में सदस्यों ने अपने परिवार के साथ दक्षिण भारत और पश्चिम भारत की यात्रा कर दर्शन लाभ लिया।

खोडियाल माता मंदिर में चंडी पाठ अर्पण किए, संरक्षक महंतजी श्री का साथ और दर्शनीय स्थल की महत्ता का उनका चित्रण सभी के लिए प्रेरणास्पद था। उन्हीं के आग्रह पर पंचवटी नासिक, रामघाट पर स्थित बालाजी मंदिर में शतचंडी महायज्ञ का आयोजन किया, मंदिर के पुनः श्रंगार के अवसर पर दूसरी बार और महंतजी के सहस्त्र चन्द्र दर्शन अर्थात् 84वें वर्षगांठ पर तीसरा शततंडी महायज्ञ का आयोजन किया, उन्हीं की प्रेरणा से नासिक, उज्जैन और हरिद्वार महाकुम्भ में स्नान हेतु जाने की परम्परा को अधिक बल मिला। इन पचास वर्षों के इतिहास में श्री भगवती मंडल के सम्पादक मंडल द्वारा तीन बार चैरेवेती ... (चलते चलो) पुस्तक प्रकाशित कर नागर समाज के संस्कार और दुर्गासप्तशती के स्त्रोत के साथ उपासना योग्य सूत्र भी प्रकाशित करवाए गए। मंडल स्थापना के 10वें, 20वें, 25वें (रजत जयंती वर्ष) 30 वें और 40वें वर्ष में सहस्त्रचंडी महायज्ञ का भी आयोजन होना अद्भूत है नागरवाड़ा के हृदयस्थल में विराजित माँ ज्वालामुखी मंदिर के सामने प्रांगण छोटा है, परन्तु आयोजकों के हौंसले बुलंद है। हाटकेश्वर महादेव का मंदिर भी पूर्ण सजगता के साथ उपयोग में लाया जाता है। यही कारण है कि सामूहिक पाठ मात्र दो बैठकों में ही पूर्ण हो जाते हैं। समय की अनुकूलता नहीं होने के कारण अभी एक बैठक की सम्भावना को नहीं खोजा गया है।

-प्रमोदराय झा बांसवाड़ा

काशी में गुजराती समाज संगठन के सूत्रधारों का सम्मान

वाराणसी में समस्त गुजराती समाज को एक सूत्र में पिरोने के दो वर्ष पूर्व के प्रयास में निरन्तर सफलता की ओर मंजिल बढ़ रही है। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदीजी द्वारा वाराणसी से लोक सभा चुनाव लड़ने की घोषणा के बाद भिन्न-भिन्न स्थानों पर अलग-अलग बसे गुजरातियों को एकत्रित करने हेतु उत्साही बुजुर्ग एवं उत्साही युवावर्ग ने मेहनत की जिसमें कुछ हजार में बसे गुजरातियों की संख्या कम से कम 70 हजार के आसपास निकली उसके पश्चात काशी गुजराती समाज का गठन श्री गुर्जर छात्र समिति कर्ण घण्टा वाराणसी में हुआ तब से लगातार एकत्रीकरण में सभी समाज के लोगों का योगदान हुआ फलस्वरूप दिनांक 26 जून 2016 को हरिशचन्द्र इन्टर कालेज मैदागिन वाराणसी में गुजराती उत्सव नामक समारोह हुआ। समारोह में मुख्य अतिथि सौराष्ट्र विश्वविद्यालय गुजरात के भू.पूर्व. वाइसचांसलर डॉ.श्री कमलेश जोशीपुरा एवं सौराष्ट्र के पूर्व मेयर डॉक्टर श्री भावना बेन जोशीपुरा का अभिनन्दन हुआ। डॉ.कमलेश भाई जोशीपुरा द्वारा पूर्व में गुजरातियों को एकत्रित करने में बहुत ही योग्यदान मार्गदर्शन प्राप्त हुआ था। गोष्ठी में डॉक्टर श्री जोशीपुरा द्वारा गुजरात से बाहर गुजराती समाज के लिए गुजरात सरकार द्वारा बीमा एवं अन्य सुविधाओं के सम्बंध में जानकारी दी गई एवं गुजरात छोड़कर गुजरात के बाहर के लोगों से उन सुविधाओं का लाभ उठाने का आह्वान किया गया। डॉ.जोशीपुरा द्वारा काशी में गुजराती समाज के वैदिक विद्वानों, शिक्षाविदों आदि द्वारा किये गये योगदान की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई। गुजराती समाज संरक्षक श्री अनिलजी शास्त्री ने विगत दो वर्षों से गुजराती समाज के परिवारों की तैयार सूची एवं अन्य प्रगति सूचना प्रस्तुत की गई। सभा में काशी गुजरात समाज के अग्रणी श्री किरीट भाई शाह, श्री मोहनदास सोनावाला, श्री योगेशभाई गाँधी, श्री महेन्द्र भाई (मोखीवाला) दवे, श्रीमती मनीषा बेन पटेल आदि ने कार्यक्रम को यादगार बनाने में योगदान दिया।

प्रेषक- वरुण वामनजी दीक्षित
सिद्धेश्वरी वाराणसी

संशय के अंधकार खत्म...

गुरु एक तेज है जिनके आते ही,
सारे संशय के अंधकार खत्म हो जाते हैं।
गुरु वो मृदंग है, जिसके बजते ही
अनहद के नाद सुनाई देने लगते हैं।
गुरु वो बांसुरी की धुन है जिसकी गुंजन से
शिष्ठता, क्षमता एवं दक्षता के मार्ग खुलते हैं।
गुरु वो ज्ञान गंगा है जिसमें गोता लगाते ही
पांचों तत्व रक्षिति, जल, पावक, गगन
समीरा एक हो जाते हैं।
गुरु वो दीक्षा का द्वार है, जिसके खुलते ही
सही मायने में संसार सागर पार हो जाते हैं
गुरु वह ज्ञान धारा है जो निरन्तरता से
हमारे जीवन प्राणों में घुलती रहती है।
गुरु वह सतचित आनन्द धन है
जो हमें हमारी स्वयं की पहचान कराते हैं
ऐसे गुरु की उपासना, आराधना तथा
पूर्ण साधना से हमें साधक बनाती है
इस प्रकार सभी व्यास पीठाधीश्वरों
गुरुजनों को शत् शत् नमन है

द्वारा- गोपालकृष्ण
श्यामलाल दीक्षित
ग्राम व पोस्ट सिर्रा
जिला खण्डवा

अहमदाबाद में 8 दिसम्बर को समूह लग्न

विगत 3 जून 2016 को अहमदाबाद में हाटकेश्वर मंदिर में जालोर-सिरोही की संयुक्त बैठक में समाज के बारहवें समूह लग्न की घोषणा की गई, जिसमें निम्न ठहराव किए गए।

आगामी समूह लग्न 8 दिसम्बर 2016 को करना तय किया है। जिसके नियम एवं आवेदन पत्र समाज के सभी घरों में पहुँचाने की व्यवस्था। फार्म प्राप्ति चढ़ावा तथा सहायक फंड के चढ़ावे 4 सितम्बर 2016 को रखे गए हैं (स्थान की घोषणा अभी नहीं) सभी समाज बंधुओं से निवेदन है कि वे समस्त समाज, सगे, संबंधियों को समूह लग्न की सूचना देवें। ताकि अधिकाधिक लोग उसका लाभ ले सकें।

डॉ.अद्वेत के 'आदिश्लोक हॉस्पीटल में आय.सी.यु. का शुभारम्भ

लगभग डेढ़दशक से पाटण की जनता हास्पीटल के साथ सम्बन्ध और पाटण की जनता के जनमंगल में महत्वपूर्ण योगदान देते हुए प्रतिष्ठापूर्ण विकास यात्रा की सुदृढ़ बुनियाद पर डॉ. अद्वेत धोलकिया के 'आदि श्लोक' हास्पीटल एवं आई.सी.यू. का 3 जुलाई 2016 को लोकार्पण हुआ। समग्र गुजरात के कोने-कोने से पधारे 4500 से अधिक शुभचिंतको सहित इस शुभ अवसर पर पधारे डॉक्टरों की उष्माभरी उपस्थिति और कोटुम्बिक परिजन मु.श्री वामन भाई बुच एवं नानीबा सु.श्री कोकिलाबेन घनश्याम भाई वैष्णव के शुभ आशीर्वाद से 'मानव यज्ञ' का शुभारंभ हुआ। सभी आगंतुकों ने डॉ.अद्वेत नित्यानंद भाई धोलकिया एवं डॉ.वर्षा अद्वेत धोलकिया के इस साहसिक उपक्रम को कल्याणमस्तु के आशीर्वाद से भाव विभोर कर दिया। धोलकिया परिवार के मूल में ही वैद्य श्री मलभाई भास्कर भाई और डॉ.नरेन्द्र भाई की पुरानी पीढ़ी की सेवा का भंडार है तो आधुनिक पीढ़ी के डॉ.अद्वेत और डॉ.वर्षा के विकास पथ का सौपान है। डॉ.अद्वेत घनश्याम भाई और कोकिल बेन वैष्णव के दौहित्र और डॉ. नरेन्द्र भाई व ज्योत्सना बेन धोलकिया के पौत्र तथा नित्यानंद भाई व शैलजा के पुत्र है।

-प्रस्तुति राजीव वच्छराजानी

बांसवाड़ा समाज प्रवासियों ने अहमदाबाद में मनाया उत्सव

प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी वड़नगरा नागर समाज बांसवाड़ा के अहमदाबाद में बसे समाजबंधुओं ने श्री हाटकेश्वर महादेव पाटोत्सव 20 अप्रैल को उत्साहपूर्वक मनाया। यह उत्सव वैजलपुर में स्थित श्री बैजनाथ महादेव के प्राचीन मंदिर परिसर में मनाया गया। उत्सव के अंतर्गत प्रातः पूजन के पश्चात् महाआरती (शिवतांडव आरती) की गई। तत्पश्चात् भजन का कार्यक्रम हुआ। दोपहर बाद चार बजे श्री महादेवजी का रुद्राभिषेक एवं षोडशोपचार पूजन किया गया। रुद्राभिषेक कार्यक्रम पं. श्री नयन झा के आचार्यत्व में विधिपूर्वक किया गया। सायं सूर्यास्त के पश्चात् महाआरती हुई तथा प्रसाद सभी उपस्थित समाजजनों ने प्राप्त किया। पूरे कार्यक्रम की व्यवस्था सर्वश्री अनंत याज्ञिक, हितेन झा, बिरेन भाई, नवीन पंड्या, पीयूष झा, मनुभाई जानी एवं अन्य नवयुवकों ने सहयोग किया।

-नटवरलाल झा
मो. 946041399

श्री मंडलोई फाउंडेशन, मोरघड़ी

निःशुल्क चिकित्सा शिविर में लाभान्वित हुए 273 श्रद्धालु

श्री मंडलोई फाउंडेशन ने अपनी सेवा यात्रा के सातवे वर्ष में नर्मदा जयंती के अवसर पर निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया। इस शिविर में श्रद्धालुओं ने निःशुल्क चिकित्सा सेवा का लाभ लिया। महाशिवरात्रि पर प्रतिवर्षानुसार दो दिवसी चिकित्साशिविर में 273 श्रद्धालु लाभान्वित हुए।

फाउंडेशन के निदेशक श्री अमिताभ मंडलोई द्वारा ग्रामीण बच्चों हेतु शिक्षा, कला, खेल प्रसार कर उनके बौद्धिक शारीरिक एवं मानसिक विकास की कार्यश्रृंखला में गत 26 जनवरी को ओंकारेश्वर उ.मा. विद्यालय के 500 बच्चों को स्कूल बेग वितरित किए।

बच्चों के शारीरिक विकास हेतु फाउंडेशन द्वारा स्व.श्री विनोदजी मंडलोई की स्मृति में 6ठे ग्रीष्मकालीन खेल शिविर का आयोजन 15 अप्रैल से 21 जून तक किया गया, जिसमें ग्राम मोरघड़ी मोर टक्का, थापना के बच्चों ने एथलेरिक्स योग, कबड्डी, तैराकी का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

इस खेल शिविर का समापन 21 जून योगदिवस के अवसर पर हुआ। इस कार्यक्रम में फाउण्डेशन के निदेशक श्री भरत मंडलोई ने अपना एवं अपने सुपुत्र भव्य मंडलोई का जन्म दिन खेल शिविर में शामिल बच्चों के साथ मनाया। आपने बच्चों के साथ बिताए इन पलों को अविस्मरणीय बताया। इस समापन अवसर पर सर्वप्रथम स्व.श्री विनोद कुमार मंडलोई के चित्र पर नगर पंचायत ऊंकारेश्वर की अध्यक्ष श्रीमती माया भाभी श्री भरत मंडलोई एवं श्रीमती शारदा मण्डलोई द्वारा माल्यार्पण किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नर्मदा अष्टक से हुई। कु.वैष्णवी अवधेश व्यास द्वारा नृत्य द्वारा गणेश आराधना प्रस्तुत की गई। साथ ही फाउण्डेशन के खिलाड़ी बच्चों ने योग, पिरामिड, आदीवासी नृत्य प्रस्तुत किये।

इस अवसर पर कु.स्वाती अमिताभ मंडलोई द्वारा सुन्दर भजन की प्रस्तुति दी गई। खिलाड़ी बच्चों को फाउण्डेशन की निदेशक श्रीमती दिव्या मंडलोई अमिताभ मंडलोई द्वारा इस वर्ष सभी बच्चों को ट्रेक सुट प्रदान किये गये। इस अवसर पर श्रीमती नंदा मंडलोई के कर कमलो से बच्चों को ट्रेकसुट वितरित किये गये।

इस कार्यक्रम में नगर पंचायत अध्यक्ष श्रीमती मायाभाभी नईदुनिया संवाददाता श्री हरीश शर्मा श्री जयप्रकाश पुरोहित पत्रिका संवाददाता उपस्थित थे। फाउण्डेशन के वरिष्ठ सदस्य श्री राघवेन्द्र राव मंडलोई, श्री मनोज मंडलोई, श्री बसंत मडलोई, श्रीमती मीनाक्षी जीजी, श्रीमती दीपाली व्यास उपस्थित थे। कार्यक्रम का आभार श्रीमती अलका मंडलोई ने माना। इस अवसर पर सहभोज का आयोजन भी किया गया।

भोपाल में स्वास्थ्य शिविर का आयोजन होगा

24 जुलाई 2016 को भोपाल नागर समाज की साधारण सभा आयोजित की गई, जिसकी अध्यक्षता श्री श्रवणेश्वर झा ने की। निम्न बिंदूओं पर सर्वसम्मति से निर्णय लिए गए।

(1) सोमवार 15 अगस्त को अंतिम सावन सोमवार को सामूहिक लघु रुद्राभिषेक का आयोजन किया जाएगा।

(2) समाज के लिए चिकित्सकीय जाँच शिविर का आयोजन डॉ. विजय आनंद जोशी के नेतृत्व में आयोजित किया जाएगा।

(3) दीपावली मिलन समारोह के साथ म.प्र. नागर परिषद की कार्यकारिणी की बैठक उसी दिन भोपाल में आयोजित की जाए। जय हाटकेश सांस्कृतिक मंच का भजन और सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन भी दीपावली मिलन वाले दिन ही किया जाए।

समाज की कार्यकारिणी में श्री रवीन्द्र शर्मा को महासचिव और प्रणव नागर को कोषाध्यक्ष पद पर सर्वसम्मति से नामांकित किया गया। अंत में भोपाल नागर समाज के अध्यक्ष के धन्यवाद प्रस्ताव और हाय टी के साथ सभा विसर्जित हो गई।

नाग देवता का पंचमुखी मंदिर

खंडवा शहर के मध्य ब्राह्मणपुरी वार्ड में श्री नाग देवता का पंचमुखी मंदिर है जो कि 200 वर्ष पूर्व मकान की खुदाई में प्रतिमा निकली थी, इसे हमारे दादाजी ने स्थापित किया एवं पूजा अर्चना करते थे। हमारे पिताजी पं. भवानी शंकर व्यास इनकी सेवा करते थे तथा उन्हें नाग देवता का इष्ट था, वे सर्पदंश के बाद जहर उतारा करते थे। वर्तमान में इस मंदिर की सेवा पं. लक्ष्मी शंकर व्यास कर रहे हैं। इसे भिलट बाबा मंदिर के नाम से जाना जाता है।

कला मन्दिर ग्रुप का अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर चयन

गत दिनों वर्ल्ड आर्टीस्टीक डांस, स्पोर्ट्स ऑफ इण्डिया के तत्वाधान में गोवा में आयोजित ६ठी नेशनल वर्ल्ड आर्टीस्टीक डांस स्पोर्ट्स चेम्पियनशिप २०१६ में उज्जैन के कला मन्दिर ग्रुप ऋषि नगर के कलाकारों ने अपनी प्रस्तुती के द्वारा लगातार तीसरे वर्ष गोल्ड मेडल प्राप्त कर नगर का नाम रोशन किया था। इसी क्रम में डब्ल्यु.ए.डी.एफ से प्राप्त जानकारी के अनुसार, आगामी नवंबर माह में उक्त दल का चयन अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर रुस (रशिया) में होने वाली प्रतियोगिता के लिए हो चुका है जहां पर दल अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करेगा। दल की संचालिका राजश्री पुराणिक एवं प्रीति शर्मा के नेतृत्व में कांची पुराणिक, हितैषी शर्मा, अंजलि प्रजापति, पलक शर्मा, अक्षिता पुराणिक, राखी सिसौदिया तथा दिव्या जैन आदि आगामी नवंबर माह में रुस रवाना होंगे। दल के चयन पर परिवार सहित समाज के लोगो, इष्ट मित्रों ने बधाई दी है।

ब्यावरा में हाटकेश्वर महादेव मंदिर निर्माण में दान-दाताओं की सूची

श्री चतुर्भुज नाथजी मंदिर पं. श्री लक्ष्मीनारायणजी शर्मा जूना ब्यावरा द्वारा रु. 11000/-, श्री गणेशजी श्रीमती वीणादेवी नागर खजराना, इन्दौर द्वारा रु. 11000/-, श्री नरेन्द्रजी बृजेशजी नागर की माताजी स्व. श्रीमती सुशीलादेवी नागर ब्यावरा की स्मृति में रु. 11000/-, स्व. श्री पूनमचन्दजी एवं धर्मपत्नी श्रीमती स्व. मांगीबाई नागर (स्वतंत्रता सेनानी) खिलचीपुर की स्मृति में (संत निवास के सामने टीन शेड) पुत्रों द्वारा रु. 21000/-, श्री रामरतनजी पिता कालूरामजी सौंधिया ग्राम माल्याहेड़ी (माल्याहेड़ी ब्यावरा) द्वारा रु. 5100/-, श्री ब्रजमोहनजी शर्मा अध्यापक कचनारिया द्वारा रु. 2100/-

बैंक खाता विवरण-
जय हाटकेश बहुउद्देशीय
जन कल्याण समिति ब्यावरा
भारतीय स्टेट बैंक शाखा ब्यावरा
(10808)
(खाता क्र. - 35582679689)

श्रावण सोमवार को भगवान हाटकेश्वर का पूजन अभिषेक

तीन कमरों में ए.सी. का शुभारंभ

श्रावण मास के प्रथम सोमवार को श्री हाटकेश्वर धाम उज्जैन पर प्रातः हमारे इष्टदेव भगवान श्री हाटकेश्वर का अभिषेक, पूजन समाज के वरिष्ठ सेवाभावी श्री सुरेशचन्द्र नागर एवं न्यास के सेवाभावी सदस्य श्री किरणकांत मेहता ने सपत्निक किया, अभिषेक पूजन आचार्य पं.श्री सतीश नागर के द्वारा सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर न्यास द्वारा तीन कमरों में एसी लगाए गए। इनका भी पूजन कर विधिवत शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर न्यास के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र मेहता, न्यास के कोषाध्यक्ष श्री रामचन्द्र नागर, न्यास के सचिव श्री सन्तोष जोशी, हमारे आशीर्वाददाता श्री जमनाप्रसादजी पाठक, श्री अनिल नागर, श्री राजीव लोचन नागर, श्री हेमंत मेहता, श्री प्रमोद नागर, श्री निगम एवं श्रीमती रमा मेहता ने आरती एवं प्रसाद का लाभ लिया।

संस्थापक अध्यक्ष की जयंती पर भगवान का मुखौटा भेंट

श्री हाटकेश्वरधाम के संस्थापक अध्यक्ष एवं दैनिक अवन्तिका के संस्थापक स्व.श्री गोवर्द्धनलालजी मेहता की जयंती पर न्यास द्वारा पुष्पांजलि अर्पित कर नमन किया गया। श्री हाटकेश्वर धाम उज्जैन के संस्थापक श्री गोवर्द्धनलालजी मेहता की जयंती के दिन इनके सुपुत्र श्री सुरेन्द्र मेहता 'सुमन' ने अष्ट धातु का श्री हाटकेश्वर का मुखौटा श्री हाटकेश्वर धाम देवालय को भेंट किया। न्यास मंडल मेहता परिवार में आभार व्यक्त करता है।

श्री प्रदीप शिवरामजी नागर टेक्सास यु.एस.ए. द्वारा अपनी माताश्री की स्मृति में 5000/- रुपये श्री हाटकेश्वर धाम में भेट किए।

सुधा कलश डीवीडी का हुआ विमोचन

संगीत सम्राट आर.डी बर्मन के जन्मदिवस के अवसर पर स्थानीय संकुल सभागृह में आयोजित कार्यक्रम के दौरान श्री हेमन्त व्यास की भजनों की डीवीडी सुधा कलश का विमोचन कलेक्टर कविन्द्र कियावत, विधायक श्री मोहन यादव, वरिष्ठ भाजपा नेता रुप पमनानी आदि के आतिथ्य में हुआ इसके साथ ही कला मन्दिर ग्रुप की संचालिका प्रिती शर्मा का सम्मान भी किया गया। इस अवसर पर समस्त इष्ट मित्रों, परिवारजनों आदि ने शुभकामनाएं प्रेषित की है।

सही गीतों के चयन से महकी

तीन घंटे तक बांधे रखने वाली संगीत संध्या

श्रीमती दिव्या मंडलोई की शानदार प्रस्तुति

संस्था मेरी आवाज ही पहचान है के तत्वावधान में हर फन मोला कलाकार एवं गायक किशोरकुमार की यादों को ताजा करती एक शाम (24 जुलाई 2016) रविवार को शहर के तीन कलाकारों ने तीन घंटे तक श्रोताओं को मंत्रमुग्ध सा बांधे रखा। आयोजन की खास विशेषता थी उसमें गीतों का उम्दा चयन... एक से एक सदाबहार गीत तथा वे भी गायकों के हाव-भाव व्यक्तित्व से तालमेल किए हुए रवीन्द्र नाट्यगृह का खचाखच भरा हाल एवं उसके अलावा खड़े हुए तथा बीच की कुर्सी रहित स्थान पर भी बैठे श्रोताओं ने कलाकारों की खूब हौंसला अफजाई की।

गायक तरुण गुप्ता ने किशोर कुमार के सदाबहार गाने प्रस्तुत किए तो श्रद्धा जगताप एवं श्रीमती दिव्या मंडलोई ने लता मंगेशकर के गीतों को प्रस्तुत किया। संगीत संध्या के खास मेहमान के रूप में वरिष्ठ फिल्म पत्रकार श्री ब्रजभूषण चतुर्वेदी एवं श्री रणवीर चावला (किशोर सांस्कृतिक प्रेरणा मंच खण्डवा) उपस्थित थे।

संगीत संयोजन आरम्भ बैंड के मंगेश जगताप, रुपक जाधव (की-बोर्ड), प्रभात रघु (गिटार), इन्द्रेश बंशीवाल (तुम्बा-ताल), लोकेश उपाध्याय तबला-ढोलक-कांगो), अमित शर्मा (आक्टोपड), अचिन यादव (ड्रम्स), शशिभूषण (बास गिटार), अनुराग काम्बले (सेक्सोफोन) ने किया।

उपरोक्त आयोजन का सफल संचालन श्रीमती ममता मेहता एवं श्री आशीष दवे (मुम्बई) ने किया। इस आयोजन में नागर ब्राह्मण समाज के भी कई संगीत रसिक उपस्थित थे। इस संस्था का यह तीसरा आयोजन है पहला जाल सभागृह, द्वितीय आनंद मोहन माथुर सभागृह एवं तीसरा रवीन्द्र नाट्य गृह और महत्वपूर्ण बात यह कि समाज की लोकप्रिय गयिका श्रीमती दिव्या मंडलोई की गायकी में निरन्तर निखार देखा जा रहा है।

अमृत-शताब्दी में ख्यात साहित्यकार अमृतलाल नागर के परिजनों ने

साझा की यादें, ये कोठेवालियां नाटक का मंचन भी किया

यदि कथ्य बहुत ताकतवर हो, सटीक नाट्यरूपांतर हो, अभिनय सहज और संवाद मार्मिक हो, उनकी भावपूर्ण अदायगी हो तो जाहिर है नाटक अपना असर छोड़ता है। दृश्यानुरूप चुने गए संगीत के टुकड़े और संवेदनशील प्रकाश योजना मार्मिकता को सांद्र करते हैं। प्रीतमलाल दुआ सभागृह में यही हुआ। दिल्ली की नाट्य संस्ता ट्रस्ट ने सूत्रधार के अमृत-शताब्दी कार्यक्रम के तहत ये कोठेवालियां नाटक मंचित किया। राजेश तिवारी निर्देशित अमृतलाल नागर की दो रचनाओं लुलु की माँ और बदरे मुनीर पर आधारित यह नाटक देह बेचने वाली स्त्रियों के प्रति समाज के विकृत नजरिए को बयां करता है।

कहानी- इसमें दो समानांतर कहानियां चलती है। एक कहानी में परिवार को पालने के लिए एक स्त्री को अपनी देह बेचना पड़ती हैं तो दूसरी कहानी में अपने ही फ्लेट के पास दूसरे फ्लेट में रह रही इस स्त्री को लेकर अमृतलाल नागर और उनके दोस्त महेश कौल के बीच बहस होती है। इसके साथ ही अपने पति के द्वारा बेची गई स्त्री के तवायफ बनने और उसकी दर्दनाक मृत्यु की कहानी भी चलती है।

अभिनय- अमृतलाल नागर के रूप में सैफ अंसार बहुत संयत देहभाषा के साथ संवादों को इस सहज अंदाज में बोलते हैं कि उनकी मार्मिकता तीव्रता से संप्रेषित होती है। महेश कौल और ईरानी के रूप में पृथ्वी संचेती सुचिंतित मैनरिज्म और कल्पनाशील पॉज के सहारे प्रभावी रहे। बंगाली बने अमित तिवारी लाउड रहे तो लुलु की माँ के रूप में श्रद्धा शर्मा और बदरे मुनीर के रूप में पूर्णिमा शेट्टीयार के लिए ज्यादा गुंजाइशे नहीं थी।

मेरी माँ नहीं होती तो पिता लेखक नहीं बन पाते

डॉ.अचला नागर ऋचा नागर

अमृतलाल नागर की पुत्री और फिल्मी लेखिका डॉ.अचला नागर ने कहा कि 15 साल की उम्र में मेरे पिता ने तय किया था कि वे लेखक बनेंगे। वे 73 साल जिए और 60 किताबे लिखी। इसके पीछे उनकी अथक मेहनत और लेखकीय समर्पण था। मेरी माँ ने उनसे वादा किया था वे लेखक बनने में उनका पूरा साथ निभाएगी। मेरी माँ नहीं होती तो मेरे पिता लेखक नहीं होते। यह बात उन्होंने अमृत शताब्दी कार्यक्रम में साझा की। सांदीपन नागर ने कहा कि उन्होंने नाटक लिखे, नाटकों पर वे घंटों बात किया करते थे तो उनकी पौत्री ऋचा नागर ने अपने पिता शरद नागर की किताब मैं मेरा मन से संस्मरण पढ़े। एक डॉक्युट्री बूंद और समुन्द्र दिखाई गई। संचालन संजय पटेल ने किया आभार माना सत्यनारायण व्यास ने।

निर्देशन- राजेश तिवारी ने सीमित स्पेस का बेहतर इस्तेमाल किया। दृश्यानुरूप संगीत के टुकड़े उनके मर्म को और संवेदनशील प्रकाश योजना दृश्य-विशेष की करुणा को घना करते हैं। दो कुर्सी और एक स्टूल जैसी कम प्रॉपर्टी के साथ उन्होंने एक्टर्स से बेहतर अभिनय करवाया।

नागर की नगरिया, किस्सों की अटरिया

माथुर सभागृह में उतरा लखनऊ

अमृतलाल नागर की तीन कहानियाँ। अलग-अलग रंगतों की। एक कहानी से निकलता सूत्र दूसरी से, दूसरी से निकलता सूत्र तीसरे से जुड़ता हुआ, एक चौथी मुकम्मल कहानी बनाता हुआ। इसमें मीठी-तीखी लखनवी जबान, उसकी खास लय, उसमें खिलती लखनऊ की तहजीब और खास रंगत, उस जबान में दबी-छिपी किरदारों की जलन और करुणा, दुःख और संताप, मजाकिया लहजा और तंज, ख्वाहिशें और ख्वाब, घुटन और उम्मीदें और इन सबके रंगमंचीय तत्वों के सहारे एक ऐसा रसायन पैदा करना जो दिलो-दिमाग पर खासा असर करता है। लखनऊ की परख संस्था ने नागर नगरिया, किस्सों की अटरिया नाटक का मंचन शुक्रवार को किया। नागरजी की पोती ऋचा नागर ने अपने बाबा पर संस्मरणात्मक बातें साझा की तो इप्टा के अभिनेता बलराज साहनी पर दृश्य-श्रव्य प्रस्तुति दी गई।

कहानियाँ- शकीला की माँ कहानी तवायफों के किस्सों से भरी है। इसमें शकीला इस घुटनभरी दुनिया से बाहर निकलकर अपने सपनों की दुनिया में कदम रखती है तो कादिर मियां की भौजी कहानी एक ऐसी स्त्री की कहानी है जिस पर सारी दुनिया मरती है, लेकिन उसका पति किसी दूसरी स्त्री के प्रेम में है और तीसरी कहानी मोती की सात चलनियां उच्चवर्गीय हिन्दू-मुस्लिम परिवार में पसरी प्रतिगामी मूल्यों पर चोट है।

अभिनय- मुख्य किरदारों के बेहतरीन अभिनय के साथ ही सहयोगी किरदार इसमें सुरीले कोरस की तरह अपनी भूमिका निभाते हुए इस नाटक को एक प्रभावी ऑर्केस्ट्रेशन में बदल देते हैं। जमीलन के रूप में लीना बलोदी और शहजादी के रूप में अनामिका जैन तवायफों की जबान, उनका लहजा और उस लहजे में संवाद गहरे भाव-बोध के साथ डिलिवर किए। इन दोनों ने हंसी-ठिठौली के साथ ही दुःख और संताप को बयां किया। भौजी के रूप में मीनू शर्मा और क़ादिर मियां के रूप में मनोजसिंह काइरा ने अपने आंगिक अभिनय से प्रभावित किया।

निर्देशन- तरुण कुमार ने तीनों कहानियों को रंगमंचीय तत्वों के साथ इस तरह से गूंथा कि लखनऊ की जीवंतता, किरदारों की तमाम रंगतें, उनके बदलते रिश्ते और उनमें छिपी मानवीय करुणा संगीत के सही जगह पर इस्तेमाल से सामने आई। खास दृश्यों की सघनता को बढ़ाने के लिए उन्होंने सुचिंतित प्रकाश योजना अपनाई।

आईना

कलयुग का ये श्रवण उल्टी गंगा बहा रहा है,
माँ बाप को ये बेटा ठोकर लगा रहा है।

ये तो भजन की पंक्ति है, लेकिन हकीकत भी यही है। मुझे एक कार्यक्रम में एक दम्पत्ति मिले, जिनकी व्यथा सुनकर बड़ा दुःख हुआ। मैंने विचार किया कि इस बारे में आपसे चर्चा कर कोई हल निकालूं। माता-पिता ने गाढ़ी कमाई से जो आशियाना तैयार किया था बेटे-बहू ने उस पर अपना हक जमा लिया तथा पहली-दूसरी मंजिल अपने पास रखकर माता-पिता को तीसरी मंजिल पर पहुँचा दिया तथा उनका खाने का टिफिन भी बाहर से आ रहा है। माता बड़े प्रेम से अपने बच्चों को गरम एवं पसंद का खाना खिलाती है, जब बच्चों की बारी आती है तो क्यों ऐसा होता है कि वे माता-पिता को बाजार का ठंडा खाना खाने पर मजबूर कर देते हैं।

ऐसा भी नहीं है कि बेटों की कमाई कम है। उस जमाने में पिताजी की जो आय थी उस अनुपात में बेटे कहीं ज्यादा ही कमा रहे हैं, लेकिन बहू-बेटे की रसोई में माता-पिता के लिए जगह नहीं है।

सोचनीय विषय यह है कि तुम जो आज अपने माता-पिता के साथ व्यवहार कर रहे हो, तुम्हारे बच्चे भी ऐसा ही व्यवहार करने वाले हैं, कम-से-कम अपने भविष्य का तो ध्यान रखो। यह शाश्वत सत्य याद रखना कि जिस घर में बड़े-बुजुर्ग का आदर होता है, उसी घर में सुख-समृद्धि एवं बरकत होती है।

-सौ.अर्चना बसंत शर्मा
राऊ

वैवाहिक (युवक)

ऊँकार राजेन्द्र ठाकर
जन्मदि. 10-12-1982
समय- 9.35 ए.एम., हैदराबाद
गौत्र- गौतमस्य
कार्यरत- बिजनेस डेवलपमेन्ट ऑफिसर आर्चिडप्लाय इंडस्ट्रीज लि. हैदराबाद **एवं**

प्रणव राजेन्द्र ठाकर
जन्म दि. 10-5-1986
समय- 9.30.24, हैदराबाद
कद- 5'4"
सम्पर्क- 9441358038, 9491644076

हरीश राजेश देसाई
जन्म दि. 25-9-1989
समय- 6.05 पीएम, राजकोट
कद- 5'8", वजन- 68
शिक्षा- बी.कॉम.
कार्यरत- टाटा कंसलटेंसी सर्विस, बड़ौदा
सम्पर्क- 9537023778

अर्पित पंड्या
जन्मदि.12-3-1988
12.58 ए.एम., इलाहाबाद
शिक्षा-एम.एस.सी.आय.टी., एम.बी.ए.(एच.आर.आय.टी.)
सम्पर्क- सुनीलकांत नागर (आगरा) मो. 9897053151

राकेश दिलीप नागर
जन्मदि. 27-8-1988
समय- 10 ए.एम., बेरछा
शिक्षा- बी.कॉम., कद- 5'9"
सम्पर्क- रतलाम
मो. 9827769444, 9713806762

आदित्य अरुण पोत्दार
जन्मदि. 24-11-1988
समय- 11 बजे दिन में, रतलाम
शिक्षा- बी.ई. (आय.टी.)
कद- 5'6"
कार्यरत- पुणे, गौत्र- कश्यप
सम्पर्क- नागदा, जिला उज्जैन
मो. 9009972339

शशांक कमलेश नागर
जन्मदि. 5 नवम्बर
समय- 9.30, आंशिक मंगल
सम्पर्क- उज्जैन
मो. 9713793748

आलोक सुरेश गुप्ता (नागर)
जन्मदि. 21-4-1980
समय- 4.15 ए.एम., गौत्र- भार्गव
शिक्षा- बी.ई. इलेक्ट्रॉनिक्स, एम.बी.ए.
कार्यरत- इलेक्ट्रॉनिक कंपनी में मैनेजर
सम्पर्क- मो. 9589862061

शुभम बंशीलाल नागर
जन्मदि. 28-9-1994
शिक्षा- बी.ए.
कार्यरत- पांडित्य कर्म (कर्मकांडी)
सम्पर्क- इन्दौर
मो. 9685871972, 9754140912

रोहित ईश्वरी शंकर नागर
जन्मदि. 23-1-1990
समय- 10.28 पीएम, भगवतगढ़
कद- 5'6", वजन- 60
शिक्षा- एम.कॉम., एलएलबी (अध्ययनरत)
कार्यरत- मारुती सुजुकी कंपनी, कोटा
गौत्र- कश्यप
सम्पर्क- 9785542746, 9413401771

प्रवीण नलीनकांत त्रिवेदी
जन्मदि. 3-5-1974
समय- 10.22 पी.एम., कोटा
गौत्र- सांस्कृत्य
कद- 5'4", वजन- 60
शिक्षा- एम.ई. (इलेक्ट्रिक इंजीनियरिंग)
UOR now IIT Roorkee
कार्यरत- रिसर्च साईंटिस्ट इन भाभा एटोमिक रिसर्च सेंटर, मुम्बई ए-क्लास गजेटेड केन्द्रीय गवर्नमेन्ट नौकरी
सम्पर्क- 9657457505

26 वर्षीय 5'3" कापिष्टल गौत्र, जन्म- अक्टूबर 1989, शिक्षा- बी.कॉम., कम्प्यूटर कोर्स, स्वस्थ, सुन्दर नागर ब्राह्मण कन्या हेतु सुयोग्य वर जन्म पत्रिका बायोडाटा सहित सम्पर्क करें- श्री वरुण दीक्षित (नागर) सी.के. 714, सिद्धेश्वरी, वाराणसी (उ.प्र.) 221001, फोन 0542-2401803

गौरव नागर
कद- 5'8"
शिक्षा- बी.पीएड.
सम्पर्क- कपालिया, जिला शाजापुर
मो. 9179313313, 9893474182

वैवाहिक (युवक)

दिव्या पंड्या
जन्मदि.16-10-1991
समय- 8.10 ए.एम., आगरा
शिक्षा- एम.एस.सी., फूड एंड न्यूट्रीशन बी.एड. 6 मंथ इंटर्नशीप इन द फिल्ड ऑफ न्यूट्रीशियन, सम्पर्क- सुनीलकांत नागर आगरा, मो. 9897053151

वैशाली गोपाल मेहता
जन्मदि. 22-7-1987
कद- 5'3", स्थान- उदयपुर
शिक्षा- एम.कॉम., पीजीडीसीए
सम्पर्क- देवास
मो. 9993611481, 8871621060

प्रज्ञा व्यास
जन्मदि. 18-4-1992
समय- सायं 7.10, उज्जैन
शिक्षा- एम.सी.ए.
सम्पर्क- 9893999168, 9754457760

वृंदा सौरभ नागर
जन्मदि. 4-8-91, कद- 5'5"
समय- 3.46 पीएम, उज्जैन
शिक्षा- बी.ई. (ऑनर्स)
कार्यरत- सॉफ्टवेयर इंजीनियर टी.सी.एस. गांधी नगर (गुज.), सम्पर्क- उज्जैन
फोन 0734-2521300, 9425917794

मालती महेश नागर
(कद- 5'2")
शिक्षा- एम.ए.
हिन्दी लिटरेचर
कार्यरत- मध्यप्रदेश पुलिस
सम्पर्क- कपालिया, जिला शाजापुर
मो. 9179313313, 9893474182

निशा गोपालकृष्ण नागर

जन्मदि. 7-3-1991, मांगलिक
समय-1.40 पी.एम., रतलाम
शिक्षा- एम.ए. हिन्दी
कद- 5'3"
सम्पर्क- रतलाम
मो. 9827769444, 9713806762

टीना सुबोध जोशी

जन्मदि. 4-11-1988
समय- 2.16 पीएम, इन्दौर
कद- 5'2", गौत्र- कोरव्य
शिक्षा- बीबीए एवं एमबीए (फायनेंस)
सम्पर्क- 9009019595, फोन 0731-2010211

शिवानी अरुण कुमार पोद्दार

जन्मदि. 3-8-1993
समय- 10.15, रात्रि, नागदा
कद- 5'2", गौत्र- कश्यप
शिक्षा- बी.एस.सी. विज्ञान, एम.एस.सी.
सम्पर्क- नागदा मो. 9009972339

जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएँ....

कु.जिज्ञासा

(सुपुत्री- अतुल- सौ.रीना शर्मा)
31 जुलाई 2016
शुभाकांक्षी- नरेन्द्र-
सौ.मंजूला शर्मा एवं परिवार
मो. 9770000227

चि.अविनाश भट्ट

(सुपुत्र- सौ.छाया-पवन भट्ट)
4 अगस्त
शुभाकांक्षी- समस्त परिवार,
देवास मो. 9827678692

चि. हार्दिक शर्मा (सुपुत्र- सौ.रीता-मोहन शर्मा)
शुभाकांक्षी- ओमप्रकाश नागर एवं समस्त परिवार, देवास मो. 9827678692

जन्मदिन एवं स्वतंत्रता दिवस की बधाई

चन्द्रप्रकाश नागर

(शिक्षक, प्रधानमंत्री पुरुस्कार प्राप्त)

15 अगस्त 1957

:: शुभाकांक्षी ::

समस्त सदस्य ऑल इंडिया केन्द्रीय विद्यालय टीचर्स ऐसोसिएशन उज्जैन एवं परिवार सदस्य उज्जैन, खिलचीपुर एवं सीहोर

मो. 9425097030

एहसान मानें... धन्यवाद दें...

इस शरीर के सक्रिय संचालन के लिए जो चेतना (आत्मा) परमपिता ने आपको प्रदान की है तो उसको हमेशा याद करते रहो, उसी प्रकार कि अपना भला करने वाले को हम सदैव याद करते रहते हैं। यहां अंतर है कि भला करने वाले या बगैर किसी स्वार्थ के कुछ देने वाले संसारी को यदि याद करोगे तो उससे केवल गुणवान होकर आत्मप्रशंसित होंगे, परन्तु उस परमपिता को याद करते रहें तो वे तुम्हें संसार सागर से पार भी कर देंगे।

सोचिये... आपके पास लाखों रुपये की बेशकीमती कार हो, वह आपके घर के सामने खड़ी है, पर उसे आप चला नहीं पा रहे हैं तो कैसा लगेगा, न चला पाने का यह अर्थ नहीं है कि तुमको वह चलाना नहीं आती। अपितु उसमें यदि पेट्रोल न हो। उस कार में केवल पेट्रोल डाले जाने के बाद वह न केवल स्टार्ट हो जाती है बल्कि उसके सारे फंक्शन काम करने लगते हैं यथा इंजन, लाईट, वायपर, पहिये, गियर सब कुछ चलने लगते हैं, उस अमूल्य कार के लिए यदि कोई आपको मुफ्त में पेट्रोल उपलब्ध करा दे तथा वह भी अनन्तकाल तक तो आप उस व्यक्ति के बारे क्या सोचेंगे... क्या चाहेंगे? उसका एहसान मानेंगे, उसको हर समय याद करेंगे, उसके प्रति तुम्हारे मन में प्रशंसा का भाव होगा, आप उसके कृतज्ञ होंगे... और भी कुछ कभी मौका पड़ा तो उसके लिए कुछ करने पर भी तत्पर रहेंगे, तो फिर जिन परमपिता परमेश्वर ने तुमको अरबों रुपयों का बल्कि अमूल्य शरीर प्रदान किया है, उनके प्रति तुम्हारे मन में कृतज्ञता का भाव क्यों नहीं, उनका भजन क्यों नहीं उनकी याद क्यों नहीं? उनका स्मरण क्यों नहीं, क्या अन्तर है उस कार में जो पेट्रोल के बगैर भंगार है, भले ही कितनी ही मूल्यवान क्यों नहीं, उसी प्रकार आत्मचेतना के बगैर तुम्हारे शरीर की कीमत क्या है और वह चेतना परमात्मा की दी हुई है। इस शरीर के सक्रिय संचालन के लिए जो चेतना (आत्मा) परमपिता ने आपको प्रदान की है तो उसको हमेशा याद करते रहो, उसी प्रकार कि अपना भला करने वाले को हम सदैव याद करते रहते हैं। यहां अंतर है कि भला करने वाले या बगैर किसी स्वार्थ के कुछ देने वाले संसारी को यदि याद करोगे तो उससे केवल गुणवान होकर आत्मप्रशंसित होंगे, परन्तु उस परमपिता को याद करते रहें तो वे तुम्हें संसार सागर से पार भी कर देंगे। उसकी याद का आलम भी बड़ा निराला है।

कलयुग केवल नाम आधारा... सुमिर - सुमिर उतरहि पारा, उनके द्वारा प्रदत्त चेतना के लिए सदैव उनका स्मरण चलता रहना चाहिए। माना कि कई बार हम मानसिक व्यस्तता या ध्यान संसार में होने की वजह से भगवान का नाम स्मरण नहीं कर पाते, परन्तु चलते-फिरते उठते-बैठते आते जाते, सोते-जागते नाम जपने की आदत डाल लो। जिसने तुम्हें कार के लिए पेट्रोल दिया। उसका उद्देश्य रहा कि तुम खूब घुमो-फिरो, आनन्द करो... उसी प्रकार परमपिता का उद्देश्य भी तुम्हें परम आनन्द प्रदान करना ही है तुम जितना उनका स्मरण करते हो उतने ही आनन्दित होते हो संसारी माया तुम्हें सताती नहीं तथा अन्त में तुम उन्हीं परमपिता, परम आनन्द में समाहित हो जाते हो। शरीर की स्वस्थता के लिए मुझे योग एवं प्राणायाम सर्वाधिक पसन्द है, क्योंकि वे घर बैठे किए जा सकते हैं, उसके लिए बाहर जाना जरूरी नहीं, उसी प्रकार नाम स्मरण और भी आसान है वह तो हम जहाँ रहे वहां कर सकते हैं, तो शुरु करिये शरीर की स्वस्थता के लिए योग प्राणायाम तथा मन की स्वस्थता के लिए नाम स्मरण। इस बारे में अपने विचार 25 अगस्त तक लिख कर भेज देवें। उन्हें आगामी अंक में स्थान दिया जाएगा। याद रहे कि विचार मंथन से भी अमृत की प्राप्ति होती है।

-सम्पादक

विषय- धरती पे रूप 'माँ-बाप' का, उस विधाता की पहचान है

माता-पिता की सेवा का फल चखने वाला ही बता सकता है उसका स्वाद

बच्चा बोला देखकर, मस्जिद आलीशान,
अल्लाह तेरे एक को, इतना बड़ा मकान?

जी हाँ... बच्चा अल्लाह से भी प्रश्न पूछ सकता है- जिज्ञासा जो भरी है, लबालब उसमें! हर वक्त वो प्रश्न पूछता ही रहता है।

अब देखिये ना महानायक अमिताभ बच्चन के बचपन को ही। अपने पिता हरिवंशराय बच्चन से वे क्या पूछ बैठे-

बाबूजी आपने हमें पैदा क्यों किया?

कवि पिता ने उस रात जागकर एक छोटी-सी कविता की रचना की 'नई लीक'। प्रातःकाल वह कविता उन्होंने अमिताभ को देते हुए कहा- यह रहा तुम्हारे कल रात वाले प्रश्न का जवाब! कविता कुछ ऐसी थी-

'जिन्दगी और जमाने की
कशमकश से घबराकर
मेरे लड़के मुझी से पूछते हैं-
हमें आपने पैदा क्यूं किया?
और मेरे पास इसके सिवा
कोई जवाब नहीं है कि
मेरे बाप ने भी मुझसे बिना पूछे
मुझे पैदा किया था।
और मेरे बाप से बिना पूछे
उनके बाप ने उन्हें...
जिन्दगी और जमाने की कशमकश..
पहले भी थी अब भी है और शायद ज्यादा।
आगे भी होगी.. और ज्यादा।
तुम ही 'नई लीक' धरना।
अपने बेटों से पूछकर उन्हें पैदा करना..
बेंजामिन फ्रेंकलिंन ने ठीक ही कहा है-
कुछ ऐसा लिखो जो पढ़ने लायक हो या
कुछ ऐसा करो जो लिखने लायक हो।

बालक अमिताभ ने भी कुछ ऐसा ही किया...

कहते हैं लेखक कभी बूढ़ा नहीं होता और ताजगी भरे उसके शब्द कभी धुंधलाते नहीं। इसके साथ ही...

वो लफ्ज़ किताबों में कहाँ होते हैं?
जो तुतली भाषा में बयाँ होते हैं।

निःसन्देह इस धरती पर हमें अपने माता-पिता ने ही जन्म दिया। यही एक ऋण उनका रह जाता है हम पर जिससे हम उऋण नहीं हो सकते चाहे कितने भी जन्म हम ले लें, किन्तु यह ऋण हम चुका नहीं सकते। परन्तु उनकी महिमा तो हम गा ही सकते हैं-

ओ मात-पिता तुमको वन्दन,
मैंने किस्मत से तुम्हें पाया।

हमारे लिये तो माता-पिता (भगवान की तरह) वन्दनीय होते हैं। लेकिन माता-पिता की भी इच्छा होती है कि उनकी सन्तान अच्छी-से-अच्छी (भगवान की ही तरह) हो।

महाराज 'मनु' और उनकी सहधर्मिणी शतरूपा ने वन में सन्तान-प्राप्ति हेतु कठोर तप करके भगवान को प्रसन्न किया तो भगवान ने उन्हें उनकी इच्छा के अनुसार

'श्री राम' के रूप में दर्शन दिए तथा उन्हें वर माँगने हेतु कहा। तब महाराज मनु ने बड़े संकोच के साथ कहा-

प्रभु मैं आपके समान पुत्र चाहता हूँ।

भगवान ने 'तथाऽस्तु' कहते हुए कहा कि 'मेरे समान और किसे मैं खोजूँगा? मैं स्वयं ही आपके यहाँ अवतरित होऊँगा- जब अगले जनम में आप राजा दशरथ और रानी शतरूपा कौशल्या के रूप में होंगे।

हर माता-पिता, अवश्य ही ऐसा ही पुत्र चाहते हैं जिसके कर्म श्री राम की तरह आदर्श हों। वह किसी का स्वत्व (अधिकार) न छीने, प्रेम और त्याग द्वारा लोगों के हृदय पर शासन करें, अपने अधिकार का कर्त्तव्य-पालन की तरह उपयोग करें, जिसके लिये वीरता का पर्याय क्षमा हो और प्रभुता का पर्याय विनय हो...

कर्म के साथ भावनाएँ भी महत्व रखती है। जैसे- जो सिर्फ अपना ही भला चाहे वह दुर्योधन जो अपनों का भी भला चाहे वह युधिष्ठिर और जो सभी का भला चाहे वह कृष्ण की भाँति होता है। अतः उसकी भावना भी सद् हो।

टॉनी रॉबिन्स लिखते हैं- 'अवसर के साथ तैयारी का मिलन उस सन्तति की उत्पत्ति करता है जिसे हम भाग्य (तकदीर) कहते हैं।'

निःसन्देह भाग्य का पिता 'परिश्रम' और माता 'सहनशीलता' है। माता अपने बच्चों के आनन्द के लिये स्वयं खाना-पीना, शरीर-सुख (सोना) आदि सब भूल जाती है। अपना सर्वस्व उन्हें दे देती है। यही उसका महात्म्य भी है। कहा जाता है-

किस मिट्टी से रचा प्रभु ने माँ का हृदय उदार।
बच्चों के पालन-पोषण का बनी हुई आधार।।

एक आदर्श माँ की अद्भुत मिसाल है मिस्त्र के लक्जर शहर की महिला सीसा-अबू-डाउह। मात्र 20 साल की उम्र में विधवा हो जाने वाली इस महिला ने अपनी एकमात्र पुत्री की परवरिश के लिये पूरे 43 साल तक पुरुष वेष धारण करके मजदूरी की। तत्कालीन मिस्र में महिलाओं के सार्वजनिक रूप से काम करने पर सख्त पाबन्दी थी। बूट-पॉलिश करने से लेकर सीमेन्ट की बोरियाँ तक उसने उठाई। इन्हें कालान्तर में मिस्र के राष्ट्रपति अब्दुल फतह अल सीसी ने 'आदर्श माँ' के सम्मान से नवाजा था।

वेद व्यास से लेकर मुंशी प्रेमचन्द तक अनेक विद्वज्जनों ने 'माँ' की महिमा पर बहुत कुछ लिखा है। स्वामी विवेकानन्द, हेलेन किलर, मेक्सिम गोर्की, कार्डिनल मेर्मीलोड, रॉल्फ वाल्डो इमर्सन, विली सण्डे, रॉबर्ट ब्राऊनिंग आदि में से किसी ने

माँ की ममता पर, माँ की लोरियों पर माँ के मातृत्व पर, माँ के हाथ की बनी सोंधी-सोंधी रोटियों पर, माँ की शिक्षा पर लिखा तो किसी ने लिखा कि माँ की गोद में ही दुनिया की सम्पूर्ण सभ्यता (सिविलाईजेशन) पलती है और यह कि माँ तो सब की जगह ले सकती है किन्तु माँ की जगह कोई भी नहीं भर सकता।

'नास्ति मातृ समम् देवम्''

धरती माँ तो हमें नख से शिख तक दुलारती है कहते हैं कि नंगे पाँव जमीन पर चलने पर धरती को आनन्द का अनुभव होता है और हवाओं की लालसा सदा हमारे बालों से खेलने की होती है।

इसी तरह पिता अपने बच्चों से सच्चे मार्गदर्शक और प्रकाश-स्तंभ होते हैं। पिता प्रायः एक नारियल की तरह ऊपर से कठोर किन्तु भीतर से कोमल होते हैं। न्यायप्रिय ध्यान रखने वाले और दयावान होते हैं। आदर्शों से वे न कभी समझौता करना चाहते हैं और न आत्म-प्रशंसा का कभी पात्र ही बनना चाहते हैं।

जब बच्चा यह महसूस करने लगता है कि उसे न केवल सही होने का बल्कि कभी गलत होने का भी हक प्राप्त है, पिता जान लेते हैं कि बच्चा अब बड़ा हो गया है। ऐसे समय में वे मनोवैज्ञानिक ढंग अपना कर बच्चों से व्यवहार करते हैं और उनका सही मार्गदर्शन करते हैं। वे उन्हें प्रोत्साहित भी करते हैं कि औसत दर्जे से सामाजिक कुरीतियों से ऊपर उठा जा सकता है- यह असम्भव भी नहीं है।

पिता ऐसी भाषा में बच्चों का मार्गदर्शन करते हैं जो बालक के अन्तर्मन को छू ले। माता की ही तरह पिता भी अपने बच्चों की अच्छी-से-अच्छी परवरिश करने का भरसक प्रयास करते हैं ताकि उनका भविष्य उज्ज्वल हो सके। इसके लिये उन्हें कितनी भी जद्दोजहद करना पड़े वे करते हैं, कोई भी प्रयास अनछुआ नहीं रहने देते। कहा जाता है-

पिता स्वर्गः पिता धर्मः पिता हि परम-तपः।
पितरी प्रीतिभापन्ने प्रियन्ते सर्व देवताः।।

पिता स्वर्ग है, पिता धर्म है, पिता ही परम तप है। यदि पिता प्रसन्न होते हैं तो सब देवता प्रसन्न हो जाते हैं। ऐसे माता-पिता की सेवा करना हम सभी का परम धर्म है। दूसरों के लिये ही नहीं, अपने माता-पिता के लिये भी जियो। इस सेवा का फल कितना मीठा होता है यह केवल इसे चखने वाला ही बता सकता है। वह सदा सुखी रहता है।

माता-पिता से अपने सम्बन्धों में 'जीवन' होना अत्यन्त जरुरी है।

और अब अन्त में यह भी-

'उदास रहता है उस मुहल्ले में
बारिशों का पानी आजकल
सुना है कागज की नाव बनाने वाले
बच्चे अब बड़े हो गये हैं।'

-मोरेश्वर मंडलोई, खण्डवा
मो. 9425342890

जिन दिन तुम्हारे कारण माँ-बाप
की आँखों में आँसू आते हैं,
याद रखना, उस दिन तुम्हारा
किया सारा धर्म....
आँसू में बह जाता है...

उपचार के लिये डॉक्टर
आपका तन काटता है,
सुई चुभाता है
फिर भी अच्छा लगता है
उपकार के लिये
माता-पिता
डाँटते हैं, दण्ड देते हैं
फिर भी बुरा लगता है...

वो क्या दिन थे....
मम्मी की गोद और पापा के कांधे...
न पैसे की सोच, न लाइफ के फंडे...
न कल की चिंता, न फ्यूचर के सपने...
अब कल की फ़िकर और अधूरे सपने...
मुड़कर देखा तो बहुत दूर है अपने...
मंजिलों को ढूंढते हम कहाँ खो गए...
न जाने क्यूँ हम इतने बड़े हो गए...

पता नहीं कैसे
पत्थर की मूर्ति
के लिए जगह बना
लेते हैं घर
में वो लोग...
जिनके घर में माता-पिता
के लिए कोई स्थान नहीं होता...

किसी भी व्यक्ति की पहचान इस बात से
होती है कि वो अपने परिवार के साथ कैसा है...
अपने माता-पिता से कैसा निभाया है...
क्यूँकि जो अपने माँ-बाप का नहीं हुआ वो
किसी और का हो ही नहीं सकता और ना
ही किसी विश्वास के काबिल है...

गतांक से आगे...

समृद्धि का सूत्र

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि बोहरा समाज में शिक्षा स्वास्थ्य शिक्षा आवास एवं दैनंदिन जीवन की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति समाज द्वारा ही की जाती है। वहां रहने के लिए खुद का घर, रोजगार के लिए बगैर ब्याज का ऋण, बीमारी एवं शिक्षा के लिए आर्थिक व्यवस्थाएं समाज द्वारा ही की जाती है। यहाँ तक कि शाम का भोजन सभी बोहरा परिवारों के यहाँ समाज अर्थात धर्मगुरु सैयदना साहब के प्रतिनिधियों द्वारा हर शहर में उपलब्ध करवाया जाता है।

आखिर समाज के द्वारा इतनी सारी सुविधाएं सुचारु रूप से कैसे उपलब्ध करवाई जाती है साथ ही उनके पास धन पर्याप्त मात्रा में जमा रहता है। दरअसल समाज में बरसों से व्यवस्था बनी हुई है कि सभी समाजजन अपनी कमाई का एक से डेढ़ फीसदी हिस्सा स्वयं आगे बढ़कर समाज के कार्यालय में प्रतिमाह जमा करवाते हैं यह राशि बड़ी मात्रा में होती है, उसके बाद समाज में रीतिरिवाज एवं गतिविधियों का संचालन धर्मगुरु के निर्देशानुसार ही होता है। जैसे हाल ही में उन्होंने व्यवस्था दी कि शादी-ब्याह के आयोजन में दो से ज्यादा मिठाई न बने तो समाज के सम्पन्न से सम्पन्न लोग भी उनके निर्देशों का पालन करते हैं, इसी प्रकार हाल ही में एक बड़े अखबार में प्रकाशित खबर के अनुसार समाज के जो लोग अन्य शहरों से इन्दौर में रहने आए उनके मकान की व्यवस्था समस्त आवश्यक वस्तुओं के साथ समाज द्वारा की गई। धर्मगुरु समाज के लोगों का किराए के मकान में रहना पसंद नहीं करते या किसी ने बैंक से कर्ज लेकर घर खरीदा है वह भी उन्हें गवारा नहीं, घर का मकान हो तथा उसके लिए बैंक से कर्ज के बजाय समाज द्वारा उसकी व्यवस्था की जाती है।

बोहरा समाज और हम...

स्वास्थ्य, शिक्षा के लिए विभिन्न समितियां बनीं हुई है। वे ही जरूरतमंदों को सहयोग करती है। इस तरह की व्यवस्था है कि वे हर मामले में समाज पर आश्रित है तथा आर्थिक मामलों में भी वे बाहर से पैसा लेने के बजाय समाज स्तर पर ही उसे घुमाते हैं, स्वाभाविक है आज समाज स्वावलंबी एवं आत्मनिर्भर है। यह सब सम्भव है देने की भावना पर यह बात अलग है कि दिए गए दान के सदुपयोग के बारे में समाजजनों को आश्वस्त रहना पड़ता है। हमारे समाज में इससे बिल्कुल उल्टी अवधारणा है देते कम है तथा हिसाब ज्यादा मांगते हैं, आगे बढ़कर देने के बजाय धनसंग्रह हेतु घर-घर जाना पड़ता है।

हमारे समाज में निश्चित रूप से कोई धर्मगुरु तो नहीं है, लेकिन मैं यहाँ मालव संत पं.श्री कमलकिशोरजी नागर का उदाहरण देना यथोचित समझता हूँ, कुछ वर्षों पहले वे अपने समाज कल्याण के उद्देश्य से कुछ अभिनव योजनाएं लेकर आए थे तथा एक निश्चित अवधि तक वे कामयाब रहीं, फिर समाज अपने-पुराने ढर्रे पर आ गया। उन्होंने कहा था कि समाज के आयोजनों में हमारी संस्कृति की झलक दिखना चाहिये, यथा वेषभूषा, अनुशासन आदि तथा सम्मान का प्रश्न है तो अपने वरिष्ठ बुजुर्गों का सम्मान हम समाज के मंच पर करें। प्रत्येक नागर परिवार केवल एक रुपया प्रतिदिन समाज के लिए निकालें। इतनी कम राशि के बावजूद यह राशि यदि जोड़ी जाए तो एक बड़ा फिगर सामने आता है। जैसे इन्दौर में 500 नागर परिवार है वे यदि एक-एक रुपया देते हैं तो एक वर्ष में यह राशि 182 500 रुपये होती है। इस राशि से कम-से-कम समाज के नियमित आयोजन निर्बाध रूप से हो सकते हैं, परन्तु शर्त यह है कि इस राशि को जिम्मेदार पदाधिकारी तक भेजी जाए। लेकिन गुरुजी की यह योजना साकार न हो सकी। उनकी भावना बहुत पवित्र एवं सोच थी कि जिस समाज से हम सम्बद्ध है उस समाज के प्रति हमारी जिम्मेदारी है, उन्होंने उज्जैन में श्री हाटकेश्वर धाम के निर्माण में अप्रतिम सहयोग देकर अपनी भावना को साकार रूप दिया, लेकिन समाज उनका आज भी अपने उत्थान के लिए उपयोग नहीं कर पा रहा है।

समाज के उत्थान हेतु उनके पास अनेक उम्दा सोच है जो हमारी बुद्धि से कहीं आगे तथा प्रगतिशील है। हमारे समाज में जो अविश्वास की भावना है वह हमारी उन्नति में बाधक है, बोहरा समाज में प्रतिवर्ष करोड़ों-अरबों रुपया आता तथा पूरा काम विश्वास के आधार पर होता है। हमारे यहाँ दान देने के बाद हिसाब की ज्यादा चिंता पाली जाती है। जबकि मुक्तहस्त से दान देने के बाद उसके सदुपयोग के बारे में पदाधिकारियों पर विश्वास करना चाहिए। और मेरा तो मानना है कि पं.श्री नागरजी को धर्मगुरु के रूप में मान्यता देकर उनके आयडियाज एवं सोच को समाज में लागू करना चाहिए। समाज का समर्पण ही उन्हें इस हेतु आकर्षित कर पाएगा, लेकिन समाज उत्थान के लिए यह जरुरी है। **(क्रमशः)**

-दीपक शर्मा

समाज सुधार की दिशा में परिवर्तन की बयार

यह समाचार निश्चित रूप से समाज में सुधारात्मक संदेश लेकर आया है कि अभी पिछले माह चांचोड़ा नागर परिवार की माताजी श्रीमती प्रभावतीदेवी नागर के इन्दौर में देवलोक गमन पर न तो कोई शोक पत्र छपवाए और न ही पगड़ी आदि का विस्तृत कार्यक्रम किया। एक दिन शोकसभा रखकर सिर्फ उज्जैन में होने वाले धार्मिक कर्म किए।

मेरे द्वारा हाटकेश्वर समाचार व जय हाटकेश वाणी में तेरहवी की संक्षिप्तीकरण पर लिखे लेखों एवं म.प्र. नागर परिषद के अध्यक्ष श्री राजेश त्रिवेदी के अथक प्रयासों का परिणाम निकला है कि चांचोड़ा नागर परिवार द्वारा इस सम्बन्ध में विचार मंथन कर समय पर उचित निर्णय लिया जाकर संक्षिप्तीकरण की भावना को मूर्तरूप दिया गया। निश्चित रूप से नागर परिवार द्वारा उठाया गया यह साहसिक कदम समाज सुधार की दिशा में 'मील का पत्थर' साबित होगा।

इसी तारतम्य में इन्दौर निवासी श्रीमती उषा दवे के भतीजे एवं श्री उमेश दवे के छोटे भाई के असामयिक निधन पर पिछले समय कोई शोक पत्र नहीं छपवाए गए और तेरहवीं का कार्यक्रम अत्यन्त सूक्ष्म रूप में किया। इसी कड़ी में उज्जैन में स्व.श्री राधेश्यामजी नागर सेवा निवृत्त श्रम न्यायाधीश की पत्नी श्रीमती करुणा नागर के निधन पर बिलकुल सूक्ष्म रूप में घर पर ही तेरहवीं का कार्यक्रम सम्पन्न कर लिया गया।

सवाल यह नहीं है कि परिजन की मृत्यु पश्चात् दुःख, संवेदना, इस प्रकार उठाए गए कदमों से समाप्त हो जाएगी। जाने वाले का दुःख तो तेरह दिन क्या पूरे जीवन ही खलता है। बंधुओं सवाल समय का है, यदि समय रहते हमने चली आ रही रूढ़िवादी परम्पराओं में बदलाव नहीं लाया तो आने वाली अगली पीढ़ी जो जेट की तरह आगे बढ़ रही है हमें माफ नहीं करेगी।

इतिहास गवाह है कि काल-परिस्थितियों के चक्र चलते संसार में, देश में, समाज में आचार, विचार, व्यवहार, रहन-सहन, रीति-रिवाज, आस्थाएँ सब कुछ बदलाव के दौर से गुजरती है, लेकिन यह परिवर्तन अत्यन्त धीमा होकर कई पीढ़ियों तक हस्तांतरित होता रहता है। धर्म से जुड़ी आस्थाएं पीढ़ियों तक चलते-चलते परम्परा का रूप ले लेती है, इस प्रकार की कुछ परम्पराएं समय के साथ सामंजस्य नहीं बैठने पर रुढ़ि का रूप ले लेती है। यही रुढ़ीवादी परम्परा किसी भी घटक समाज के विकास के मार्ग को अवरुद्ध करती है। बंधुओं! समय की कसौटी पर ऐसी परम्पराओं की कोई उपादेयता नहीं, कोई सार्थकता नहीं। हम सिर्फ उन्हें इसलिए ढोए चले जा रहे हैं, कि हमारे पूर्वज उन्हें निभाते चले आ रहे थे।

चूंकि अब बदलाव का दौर आरम्भ हो चुका है, 'देर आए दुरूस्त आए' वाली कहावत को चरितार्थ करते हुए इस परिवर्तन को आगे बढ़ाना है इसका समुचित प्रचार-प्रसार करना है। इस अभियान को हम कैसे प्रचारित करेंगे, इस सम्बन्ध में जब श्री राजेश त्रिवेदी, अध्यक्ष म.प्र. नागर परिषद से पूछा गया तो उन्होंने बताया कि वे निकट भविष्य म.प्र. नागर परिषद् की इकाईयों के अध्यक्षों की एक विशेष बैठक बुलाने जा रहे हैं, जिनमें तेरहवीं के कार्यक्रमों के संक्षिप्तिकरण के सम्बन्ध में निम्न तीन बिन्दुओं पर गहन चर्चा करके आम सहमति बनाई जाकर, उसके क्रियान्वयन के लिए ठोस कदम उठाए जाएंगे-

(1) परिवार में परिजन की मृत्यु पर शोकपत्र किसी भी दशा में नहीं छपवाए जाए।

(2) उज्जैन में दशा, ग्यारवां, बारवां की आवश्यक प्रक्रिया पूरी की जाए।

(3) तेरहवीं का कार्यक्रम सिर्फ परिवार जन की उपस्थिति में ही अत्यन्त ही संक्षिप्त रूप में किया जाये तथा पगड़ी सिर्फ घर में सबसे बड़े पुत्र को 'मामा' द्वारा की जाए। अन्य किसी की नहीं किसी को भी नहीं।

श्री त्रिवेदी ने आगे बताया कि नागर समाज एक सुसंस्कृत अग्रणी एवं कलम, कड़छी और बरछी से जाने वाला सभ्य समाज है, और इस नई पहल को अपनाने एवं उसके क्रियान्वयन में कोई कठिनाई नहीं आना चाहिए। श्री त्रिवेदी ने चिंता जाहिर करते हुए कहा कि ग्रामीम इलाकों में बसने वाले नागर समाज में अभी भी बड़े पैमाने पर तेरहवीं के कार्यक्रम किए जाते हैं, जो किसी भी दशा में उचित नहीं है। वे शीघ्र ही निकट भविष्य में ग्रामीण इलाकों में बसने वाले नागरजनों से व्यक्तिगत व पत्र व्यवहार द्वारा सम्पर्क कर अपील करेंगे।

हर नए अभियान की शुरुआत करने में कठिनाइयाँ और आलोचना का सामना करना पड़ता है, लेकिन यदि परिवर्तन लाने की दृढ़संकल्पता समाज सेवकों में है तो चाहे कितनी दीवारे क्यों न खड़ी कर दी जाए, सफलता झोली में आने को तैयार खड़ी रहेगी। अभियान का कांरवा सही दिशा में आगे बढ़ता रहा तो रास्ता खुद मार्गदर्शक बनकर आपके आगे-आगे चलेगा।

भगवान हाटकेश्वर से यही प्रार्थना है कि हमारा समाज दकियानुसी परम्परा से जितनी जल्दी मुक्त हो सके उतना अच्छा। जय हाटकेश।

-सुरेश दवे 'मामा'
नीमवाड़ी शाजापुर
फोन 07364-227004

एक उत्कृष्ट बात जो शेर से सीखी जा सकती है। वो ये है कि व्यक्ति जो कुछ भी करना चाहता है उसे पूरे दिल और जोरदार प्रयास के साथ ही करे।

छोड़ आए हम वो गलियाँ

जहाँ हमारे बुजुर्गों की आत्मा बसती है, आँखें वहाँ जाने को तरसती है

मेरे पुरखों का गाँव पिपलौदा (तहसील) है। यह रतलाम से 40 कि.मी. दूर है। वर्तमान में वहाँ कोई नहीं रहता है। अचानक दिनांक 8-7-2016 को रतलाम से सैलाना किसी कार्यवश जाना था तभी पिपलौदा जो कि सैलाना के पास है जाने की तीव्र इच्छा हुई। दोपहर करीब 1 बजे जब पिपलौदा पहुँचा तो बस स्टेण्ड की काया पलट चुकी थी, पूछना पड़ा कि गाँव का रास्ता किधर से जाता है। चन्द मिनटों में गाँव की दहलीज पर था। सभी तरफ कच्ची सड़क की जगह पक्की सीमेन्ट की सड़के थी व हर घर के बाहर नल लगा था।

पहले मैं मोहल्ला प्रहलादपुरा गया जहाँ पर मेरे श्रद्धेय दादाजी श्री विद्याधरजी रावल निवास करते थे। यहीं मेरे पुरखों का निवास था जहाँ पर मैं 10 वर्ष की उम्र में पढ़ने के लिये रहा था। मकान पूरी तरह उसी अवस्था में था जो मैंने 55 वर्ष पूर्व देखा था। वहीं भोजन का स्थान जिसे हम ओल्ड़ी कहते थे। वही मन्दिर का कमरा जहाँ मेरे दादाजी लगभग तीन घण्टे तक पूजा करते थे। अन्य कमरे भी वैसे ही थे जिस अवस्था में पूर्व में देखा था। पूर्वजों के उस स्थान को देखकर लगा व इतनी आत्मिक अनुभूति हुई जैसे सब यहीं पर है।

किसी ने कहा कि स्वर्ग इस धरती पर कहीं है तो यहीं पर है मुझे भी लगा कि स्वर्ग इस धरती पर कहीं है तो हमारे पूर्वजों के इस स्थान पर है जहाँ वो रहते थे।

गाँव के राधा-कृष्ण मंदिर को देखा जहाँ पर मेरे दादा सत्यनारायण भगवान की पूजा करते ते। वह पूजा भक्तिभाव से होती थी, जिसमें गाँव के सभी लोग इकट्ठा होते थे व कण्डील में दीया रखकर भगवान की आरती करते थे। 'लीलावती-कलावती' का प्रसंग कई बार सुना। उसी समय मन में तीव्र इच्छा हुई कि वह स्थान 'चाँदखेड़ी' कहां है जहाँ पर मेरे श्रद्धेय दादा प्रति शनिवार हनुमानजी की आराधना करते थे। अचानक मुझे माइक की आवाज सुनाई दी मैंने पूछा यह आवाज कहां से आ रही है। मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा जब मुझे बताया गया कि चाँदखेड़ी में हवन हो रहा है। जिसे हम आत्मा से याद करते हैं वो हमें स्वयं बुला लेते हैं। चांदाखेड़ी पहुँचे पर जब मैंने अपना परिचय दिया तो उनमें से एक बुजुर्ग बोले कि क्या आप रामचन्द्रजी के लड़के हो। शहरीकरण में पड़ोसी का भी पता नहीं होता, परन्तु गाँव में अब भी लोग अपने हृदय में 55 वर्ष की याद समेटे हुए हैं। आश्चर्य उस व्यक्ति को, उसके परिवार के बारे में बता रहे हैं जो 55 वर्ष बाद अपने गाँव लौटा है। लगा कि जैसे कमरे का ताला खोलूं और यहीं बस जाऊ....

वर्तमान में श्री नवदुर्गाप्रसादजी रावल पिपलौदा में निवासरत है पूर्वजों की कड़ी में एकमात्र भुवाजी श्रीमती सुशीलादेवी है जिनका आशीर्वाद पूरे परिवार पर है।

गाँव में सड़के हैं वहीं मकान हैं, फूलों के बगीचे हैं, बहती हुई नदी है। परन्तु वो नहीं है जो हमारे अपने थे। बस यही कहानी है।

-प्रकाशचन्द्र रावल
179, कस्तुरबा नगर मेन रोड़, रतलाम मो. 9617563002

जिन्दगी के मोहल्ले में आत्मा का भवन माँ

दुनिया का पहला प्रेम - माँ
सबसे कीमती वरदान - माँ
धरती पर ईश्वर की कहानी - माँ
खुशियों के बाग में बागवान- माँ
प्रकृति के सौंदर्य का पहला उपहार - माँ
काँटोभरी राह में फूलों का अहसास - माँ
खुशियों के अनमोल खजाने की राह - माँ
प्यार और डांट का खट्टा मीठा खेल - माँ
गेरों की दुनिया में अपनों का विश्वास - माँ
कुदरत की सम्पूर्ण व्यवस्थित व्यवस्था- माँ

-संकलन - जितेन्द्र नागर, मोती बंगला, देवास

किसका रस्ता देखे है...

किसका रस्ता देखे है, कोई आता है क्या?
सूनी-सूनी राहों पर, कोई कहीं जाता है क्या?
मौज-मस्ती के दिन नहीं, भजन कर भगवान का,
लख चौरसी पार कर, चौला पहना इंसा का
जो पाया है सब्र कर, सब्र में जाता है क्या?
सूनी-सूनी राहों पर...?
ये पतझड़ सावन की बहारे, आती-जाती रहेगी,
सुख-दुख की कारी बदरी, जीवन में छाती रहेगी।
कड़वे मीठे अनुभव से, सार-तत्व पाता है क्या?
सूनी-सूनी राहों पर...?
अब तो संध्या की बैला है ये
सुबह का इंतजार कर,
बहुत द्वेष-कलह में जिया,
आ अपनों से तो प्यार कर
जो बीत गया है उसे भूल
उसको पास बुलाता क्या?
सूनी-सूनी राहों पर...

-सुभाष नागर 'भारती'
नागर मेडीकल स्टोर
अकलेरा (राज.)
फोन 07431-272310

आज के युग में स्त्री पुरुष से किसी भी स्थान पर पीछे नहीं है। आज हर स्त्री पुरुष के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रही है। आज की नारी पुरुष से कमजोर नहीं पुरुष से अधिक शक्तिशाली सिद्ध हुई है। स्त्री कोमल जरुर होती है, किन्तु कमजोर कभी नहीं पड़ती।

फाईल फोटो

स्त्री कोमल है, कमजोर नहीं

प्राचीनकाल में स्त्रियों को चार दीवारों के अंदर रहकर घर के काम-काज ही करना पड़ते थे, किन्तु समय बदल रहा है और समय के साथ ही साथ लोगों की सोच भी बदल रही है। इसलिए प्राचीन समय में लोग बेटे की माँग ज्यादा ही करते थे, किन्तु आज धीरे-धीरे लोग बेटों के साथ-साथ बेटियों की भी माँग करने लगे हैं, क्योंकि आज हर क्षेत्र में ही बेटों से आगे हैं बेटियाँ। आज माता-पिता बेटे और बेटियों में अंतर नहीं समझते।

पुराने समय में कहा जाता था कि बेटियाँ शादी के बाद पराया धन होती है, किन्तु आज मैं पूछती हूँ कि बेटियों को पराया धन क्यों कहा जाता है? इसका जवाब यही है न कि बेटियाँ तो परायी अमानत होती है, बेटियाँ माता-पिता के पास नहीं रहती है तो आज यह बताओ कि कौन से बेटे माता-पिता के पास या साथ रहते हैं। आज हर बेटा अपने माता-पिता से दूर रहता है। कहते ही है न जरूरत होने पर तो पराया धन (बेटियाँ) ही काम आती है। बेटियाँ माता-पिता से दूर रहकर भी पास होती है, जबकि बेटे तो माता-पिता के पास होकर भी दूर हो जाते हैं। बेटियाँ माता-पिता को जरूरत पड़ने पर माता-पिता के पास आ जाती है और साथ ही साथ अपने पति, दामाद रुपी बेटे को भी साथ लेकर आती है। और इसी जगह यदि माता-पिता को जरूरत होने पर भी बेटे को पुकारे तो भी बेटे का जवाब यही होता है कि अभी छुट्टी नहीं है या फिर बच्चों के स्कूल चल रहे हैं।

बेटियाँ सब के नसीब में होती है
खुद को जो घर पसंद आए वहाँ होती है।

हर क्षेत्र में ही बेटियों को देख लो आप हर स्थान पर बेटियाँ बेटों से आगे निकलती जा रही है। बेटियाँ परिवार के प्रत्येक सदस्य की सहायक होती है। जहाँ बेटियाँ माँ के साथ-साथ घर के काम करवाती है वहीं पिता के बिजनेस को बुलंदियों के शिखर पर ले जाती है तथा साथ ही अपने भाई की एक अच्छी दोस्त भी साबित होती है तथा वही बेटियाँ आगे चलकर दो परिवारों का मान बढ़ाती है। आज दो परिवारों की डोर बेटियों के हाथों में ही होती है। आज जिन घरों में बेटियाँ चहकती है उन घरों में कभी सुनापन नहीं होता है। बेटियों के माता-पिता को हमेशा अपने आप पर गर्व होना चाहिए कि हमारे पास पुत्री रूपी रत्न है जिसकी चमक न तो कभी फींकी पड़ सकती है और न कभी कम हो सकेगी।

'कहते हैं बेटियाँ होती ही इसलिए हैं
कि वे आज इस घर में उजाला करें
और कल किसी और घर में
ये मत सोचो कि
हमारे घर की रौनक चली गई
बल्कि ये सोचो कि वह किसी और घर में
रौनक करने चली गई।

ये बात भी बिल्कुल सत्य है कि यदि भगवान बेटियों की किस्मत में माता-पिता को साथ ले जाना लिखता तो शायद आज एक भी वृद्धा-आश्रम न खुल पाते।

'स्त्री कोमल है कमजोर नहीं'
उसकी परीक्षा लेने की कोशिश भी मत करो।

-प्रीति धीरज रावल
ए-1/18, एम.आई.जी.-2 महानंदा नगर, उज्जैन

घर

जहाँ पोस्टमेन पत्र लाता है वह घर नहीं, जहाँ रिश्तेदार आते हैं वह घर नहीं, पर जहाँ पहुँचते ही मन को शांति मिले वह घर है, जहाँ चैन की नींद आए वह घर है, जहाँ रहते हुए दुनिया का हर गम भूल जाएं वह घर है, इसीलिए किसी ने कहा है,

घर में काशी, घर में मथुरा,
घर में गोकुल धाम,
मुझे नहीं जाना तीरथधाम

क्षमा

क्षमा बड़न को उचित है, छोटन को उत्पात।
कहा विष्णु का घटी गया, जो मृग मारी लात।।
छोटों के लिए उत्पात करना स्वाभाविक है,
लेकिन बड़ों के लिए क्षमा करना ही उचित है।

जैसे मृग ने अगर विष्णु भगवान की मुरत को लात मारी, फिर भी विष्णु भगवान के गुणों में कमी नहीं आएगी, वैसे ही जो क्षमा करता है उसका कभी कोई नुकसान नहीं होता, फायदा ही होता है।

-संकलित- उषा ठाकोर, मुम्बई मो. 9833181575

अस्तेयम्

अस्तेयम् का अर्थ है अचौर्य्यम् - किसी की वस्तु, विचार, सम्पत्ति अथवा कोई भी चीज न चुराना, न लेना, न अपेक्षा रखना, न उसे अशुभ दृष्टि से देखना, ईर्ष्या करना और न ही उसके प्रति आसक्ति का भाव रखना। दूसरे शब्दों में कहे तो अपने परिश्रम और पुरुषार्थ पर ही भरोसा रखना अस्तेयम् कहलाता है।

जो अपने परिश्रम से प्राप्त होता है वही शाश्वत होता है और उसी में व्यक्ति को सन्तोष भी मिलता है। दूसरे से प्राप्त वस्तु में न तो सन्तोष प्राप्त होता है न ही आनन्द की प्राप्ति होती है।

शास्त्रों में लिखा है-

उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः,
दैवेन देयमिति कापुरूषा वदन्ति।
दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या,
यत्ने कृते यदि न सिद्धयति कोऽत्र दोषः।।

परिश्रमशील पराक्रमी पुरुष ही लक्ष्मी (ऐश्वर्य) प्राप्त कर पाते हैं, दैव (भाग्य) से प्राप्त होगा। ऐसा कायर पुरुष कहते हैं। देव को छोड़कर अपनी शक्ति भर पुरुषार्थ करना चाहिए, यदि ऐसा करने पर भी सफलता नहीं मिलती तो आपका क्या दोष अथवा ये सोचना चाहिए कि परिश्रम करने पर भी सफलता नहीं मिली है तो कोई ना कोई दोष रह गया है, जिसे दूर करने का प्रयत्न करते रहना चाहिए।

महापुरुष कहते हैं कि व्यक्ति को कभी भी निराश नहीं होना चाहिए। भारतीय संस्कृति का अर्थ है उत्साह, आशा, परिश्रम, निरन्तरता, विश्वास, अनालस्य, प्रेम, सद्भाव, सहकारिता की भावना और प्रतीक्षा करना।

अनेक व्यक्ति परिश्रम न करके भाग्य के भरोसे बैठे रहते हैं अथवा भाग्य को दोष देते हैं वस्तुतः कर्म से ही भाग्य बनता है। सुभाषित रत्न भाण्डागार में लिखा है- उद्यमः साहसं धैर्यः बुद्धि शक्तिः पराक्रमः।

षडेते यत्र वर्तन्ते तत्र देवः सहायकृत् ।।

उद्यम (श्रमशीलता), साहस, धैर्य, बुद्धि, शक्ति और पराक्रम ये छः गुण जिसके पास होते हैं, देवता भी उसकी सहायता करते हैं।

उद्यमेन हि सिद्धयन्ति कार्याणि न मरोनथैः
नहि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः।।

परिश्रम- पुरुषार्थ से ही कार्य सिद्ध होते हैं न कि मात्र कामना करने से। सोये हुए सिंह के मुख में हिरन प्रवेश नहीं करते पुरुषार्थ पूर्वक सिंह को उन्हें पकड़ना पड़ता है।

यथा ह्येकेन चक्रेण न रथस्य गतिर्भवेत् ।
एवं पुरुषकारेण विना दैवं न सिध्यति।।

जिस प्रकार एक पहिये का रथ चल नहीं पाता, उसी प्रकार पुरुषार्थ के बिना केवल देव (भाग्य) से कार्य सिद्ध नहीं होता।

योजनानां सहस्रं तु शनैर्गच्छेत्पिपीलिका।
अगच्छन्वैनतेयोऽपि पदमेकं न गच्छति।।

धीरे-धीरे चलती हुई भी चींटी हजार योजन तक चली जाती है और न चलता हुआ गरूड़ एक कदम भी आगे नहीं बढ़ पाता।

अस्तेयम् का भाव है व्यक्ति को देश काल पात्र अनुसार व्यवहार करके सफलता अर्जित करनी चाहिए। अपने लक्ष्य से कभी भटकना नहीं चाहिए। हनुमानजी जब माँ सीता की खोज में लंका जाते हैं तब मार्ग में उन्हें छायाग्रहिणी सुरसा और लंकिनी नामक तीन राक्षसी मिलती है। हनुमानजी उनसे टकराते नहीं है और न ही संघर्ष करते हैं अपितु अपने बुद्धि कौशल और व्यवहार से अपने लक्ष्य को ध्यान में रखकर इन बाधाओं को पार कर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ जाते हैं।

हम भी जब बाधाओं के कारण बीच में रुक जाएंगे अथवा अटक जायेंगे तो लक्ष्य तक नहीं पहुँच पायेंगे। परिश्रम और पुरुषार्थ के साथ विवेक का प्रयोग बहुत आवश्यक है। नीतिशतक के अनुसार-

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः
प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्याः।
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः
प्रारभ्य चोतमजना न परित्यजन्ति।।

सामान्य व्यक्ति विघ्नों के भय से कार्य प्रारम्भ ही नहीं करते। मध्यम लोग प्रारम्भ करके विघ्नों के आने पर कार्य छोड़ देते हैं। बारबार विघ्नों से बाधित होने पर भी उत्तम जन कार्य प्रारम्भ करके नहीं छोड़ते। अर्थात् सफलता प्राप्त करके ही दम लेते हैं।

सफलता प्राप्त करके भी अभिमान नहीं होना चाहिए। उसे ईश्वर की अनुकम्पा और गुरुजनों का आशीर्वाद मानना चाहिए। यही अस्तेयम् की सार्थकता है।

-डॉ.रवीन्द्र नागर

महिला- इतने हट्टे-कट्टे हो, मेहनत-मजदूरी क्यों नहीं करते?

भीख मांगना बुरी बात है..।

भिखारी - ...और आप भी तो इतनी सुंदर हो, फिल्म में आने के बजाय घर में क्यों काम करती हो?

महिला- जरा ठहरो, मैं तुम्हारे लिए अभी कुछ लाती हूं...।

क्रोध से बचें

क्रोध करते समय क्रोधी के शरीर में जहर फैल जाता है। सात फूट के दायरे में क्रोध के परमाणु फैले रहते हैं। क्रोध अल्पायु व अल्पजीवी व परजीवी है। जैसा कहा गया है क्रोध एक क्षणिक पागलपन है। क्रोध में आँखे लाल हो जाती है। दांत भीच जाते हैं, नथुने फड़कने लगते हैं, सांस गरम व बी.पी. बढ़ जाती है।

क्रोध एक तात्कालिक क्षणिक पागलपन है। क्रोध को कोप, रोष, गुस्सा या आवेश कहें, बात एक ही है। क्रोध चित्तवृत्ति का उग्रभाव है। यह एक अवगुण है जो कमजोरी का लक्षण है। उथले आदमी को जल्दी क्रोध आता है। किसी किसी में यह जन्मजात स्वाभाविक गुण होता है। बात बात पर गुस्सा करते रहते हैं जिसे नकचिड़ा कहा जाता है। क्रोध मुर्खों को होता है। क्रोध एक तीखी जलन है, यह बिना रोग का रोग है। क्रोध व जिद वर्तमान में महामारी है। आदमी को क्रोध व महिलाओं को जिद की बीमारी है ही।

क्रोध एक भभकती हुई आग है। आग तो केवल हाथ या चमड़ी को ही जलाती है, जबकि क्रोध हमारी अन्तर्रात्मा को झुलसा देता है। क्रोध की आग में परिवार की खुशियां धूँ धूँ करके जलने लगती है। क्रोध की उत्पत्ति विवाद से होती है, अतः व्यर्थ विवाद में न पड़ें। अपनी बात के विरुद्ध बात सुनकर, अपमानजनक शब्दों से, प्रतिष्ठा के प्रश्न पर या हानि अथवा नुकसान होने पर आवेश या क्रोध स्वाभाविक रूप से उपजता है परन्तु ज्ञानी ज्ञान से क्रोध को दबा देता है।

क्रोध एक रोग है भयंकर बीमारी है। एक मनोविकार है। क्रोध दुःख की अन्तहीन कथा है। एक दशा है, भ्रम का माया जाल है। क्रोध भयावह है। भयंकर है। भयानक है। आप माने न माने क्रोध बड़ा कुरूप है। भद्दा है। अंधा है। क्रोध में बोध नहीं होता का सहोदर क्रोध को कहा गया है। क्रोध गूंगा, बहरा व विकलांग है। क्रोध नरक का द्वार है। दुःखों का भण्डार है, अनर्थ व अर्थ है। सबसे समीपस्थ शत्रु है। छुपा हुआ दुश्मन है। आग है, अंगार है, पाप का बीज है। बर्बादी का कारक है, पीड़न का पर्याय है, विवेक का दुश्मन है। पश्चाताप रूपी फल है। होश का हत्यारा है, हलाहल विष है। विषधर सर्प है। विनाश का सेतु है, बर्बादी का बादल, हैवानियत का हथियार है हिंसक है, क्रूर है, कठोरता का कीड़ा है, कटु फीका, रसहीन आग की चिंगारी है, दावानल है, दुर्घटना का हेक है, अप्रत्याशित विघटन है, राक्षस वृत्ति है, चाण्डाल है, बवण्डर है, क़रूणाहीन है दयाहीन निरा पशुवत है अवनति की नींव है। क्रोध में मार है, धार है, वार है, बेकार है, खार है भार है, रार है, हार है। क्रोध में अदया है।

करुणा हीन, दयाहीन होता है, क्रोध हत्यारा अत्यन्त बुरा, बुराई का बम है। विनाश का कारण है। नारकीय नौटंकी है, दैत्य दशा नीच प्रवृत्ति हीन हरकत, पशुता व पीड़क है। आत्महंता खूनी हत्यारा है, नाश, सर्वनाश की जड़ है। इंसानियत पर धब्बा, मानवता पर दाग है। कुंठा है हीन मानसिकता है। क्रोध मदहोशी का मद क्षय रोग, असंतुलित आवेग, दुःखों का भण्डार अनर्थ का जड़, होश का हत्यारा, पाप का प्याला संताप का सहोदर क्रोध को कहा गया है।

क्रोध करते समय क्रोधी के शरीर में जहर फैल जाता है। सात फूट के दायरे में क्रोध के परमाणु फैले रहते हैं। क्रोध अल्पायु व अल्पजीवी व परजीवी है। जैसा कहा गया है क्रोध एक क्षणिक पागलपन है। क्रोध में आँखे लाल हो जाती है। दांत भीच जाते हैं, नथुने फड़कने लगते हैं, सांस गरम व बी.पी. बढ़ जाती है। मुट्ठी बंद, पंव चंचल, आवाज ऊँची हो जाती है। क्रोधी पसीना-पसीना हो जाता है। शरीर में कम्पन अपशब्दों की बौछार होने लगती है। क्रोध का गाली से प्रगाढ़ संबंध है। क्रोध में बोलते कम बकते ज्यादा है, इसलिए क्रोध अशुभ है। पापमय है, पाप की जड़ है। अपराध की जड़ है, नाश की जड़ है। गहरा संताप है। क्रोध के पश्चात् पश्चाताप ही पश्चाताप है। क्रोध करने वाला, बकवासी बाद में पछताता ही है। क्रोधी आदर योग्य नहीं होता। एक बात ओर वृद्ध आदमी का क्रोध कुत्ते के भौंकने के समान है। कोई ध्यान नहीं देता है। अतः वरिष्ठों को संयमित ही रहना चाहिये। घर में मेहमान की तरह रहें। क्रोध वैसे अपने से कमजोर पर आता है, क्रोध के समान निकटस्थ कोई शत्रु नहीं है। क्रोध से धर्म का, पुण्य का, तप का व यश, मान-सम्मान का नाश हो जाता है। इसलिये क्रोध नाश, विनाश एवं सर्वनाश का कारक व कारण होता है।

क्रोध लोक परलोक दोनों को बिगाड़ देता है। यह ध्रुव सत्य है कि एक शब्द की चोंट पूरी सदी को भुगतना पड़ती है। बड़ा अनर्थ हो जाता है, अप्रत्याशित घटना घट जाती है, जो नहीं होना चाहिए था वह हो जाता है, एक क्रोधी व्यक्ति स्वयं को परिवार, समाज व देश तक को मुसीबत में डाल देता है। सभी का विनाश संभव है। क्रोधी

अल्पायु होता है, रोगी होकर कई व गंभीर रोगों का शिकार हो जाता है। क्रोध मूर्खता से प्रारम्भ होता है तथा पश्चाताप से अन्त होता है। छोटी या बड़ी हर लड़ाई की जड़ क्रोध ही है। क्रोधी क्रोध करके अपनी बात मनवाने व सही सही ठहराने की कोशिश करता है। क्रोध की स्थिति में अपने से ताकतवर आदमी को उठाकर फैंक देता है। अतः क्रोध से बचकर रहना ही श्रेयस्कर व अकलमंदी है।

वैसे क्रोध तो ईश्वर (भगवान) को भी आता है, तो फिर मनुष्य को क्यों न आवे। किन्तु ईश्वर का क्रोध संसार के हित के लिए होता है। जबकि मनुष्य का क्रोध दूसरों के अहित के लिये होता है। अतः काम, क्रोध व लोभ सम्यक होना चाहिए और सन्तों को तो क्रोध से कोसों दूर रहना चाहिए। संत वही जो शांत रहे। अपने क्रोध से दूसरों पर क्या गुजरती है। इसकी कल्पना कर ले तो इस दुर्गुण से छूटकारा पाया जा सकता है। क्रोध से कभी क्रोध शान्त नहीं होता। आग पर पानी से ही काबू पाया जाता है। व्रत के दिन क्रोध आ जाय तो व्रत खण्डित हो जाता है। अतः क्रोध से बचें। क्रोध का सर्वश्रेष्ठ उपचार है विलम्ब करना या टाल देना।

अंत में क्रोध करें तो सम्यक हो, बनावटी हो तो भलाई ही भलाई है। वरना मेरे आराध्य 1008 श्री पं.कमलकिशोरजी नागर म.सा. के श्री मुख से मैंने कई बार सुना है उन्हें नमन करते उन्हीं के शब्द उन्हें समर्पित है।

कामीं क्रोधी लालची,
इनसे भक्ति न होय।
भक्ति करे कोई सूरमा,
जाति वरण कूल खोय।

-रमेश रावल
डेलची (माकड़ोन)
मो. 8085851920

गुरु महिमा

जिन महानुभावों ने अब तक गुरु न किया हो उन्हें अवश्य कर लेना चाहिए। 'शुभ्रस्य शीघ्रम' इस कहावत के अनुसार शुभ कार्य में विलम्ब न करें। पूर्ण विद्वान और हरि-भक्त-परायण गुरु के समीप जाकर-

नमस्कृत्य गुरुं दीर्घं प्रणामैस्त्रिभिरादृतः।
तत्पादौगृह्य मूर्ध्निस्वे निधाय विधिनान्वितः।।
गृह्णीयान्मन्त्रराज तू निधिकांक्षीवृ निर्धनः।
दत्वा तु दक्षिणां तस्मै यथाशक्ति यथाविधिः।।
तमर्चयेद्यथाकालं पाद्यं चास्य यदाचरेत् ।
गुरुोः पादोदकं पुत्र ! तीर्थकोटिफलप्रदम् ।।

(पद्मपुराण)

श्री गुरुदेव को तीन बार आदर-सहित साष्टांग दण्डवत प्रणाम करें। उनके चरणों को ग्रहण कर विधिपूर्वक अपने मस्तक पर रखें। जिस प्रकार दरिद्रधन की चाहना करता है, उसी प्रकार की चाहना से श्री गुरु से मंत्रराज (अष्टादशाक्षर श्री गोपालमंत्र) ग्रहण करें। अपनी शक्ति के अनुसार दक्षिणा भेंट देकर चरणोदक लेवें। श्रीगुरुदेव का चरणोदक लेने से कोटि-कोटि तीर्थ स्नान का फल प्राप्त होता है। यदि श्री गुरु का स्थान समीप ही हो तो नित्यप्रति जाकर उनके दर्शन और तन-मन-धन से यथाशक्ति सेवा करनी चाहिए। यदि स्थान दूर हो तो उनके चित्रपट का पूजन उनके दिये हुए मन्त्र का जाप तथा उनके द्वारा सदुपदिष्ट अपने इष्टदेव का भजन-पूजन नित्यप्रति करता रहे, इसी में श्रीगुरुदेव की महान प्रसन्नता है। यह कार्य तो इस प्रकार नित्यप्रति चलता ही रहे और इसके अतिरिक्त वर्ष में एक बार श्रीगुरु पूर्णिमा (आषढ़शु.पूर्णिमा) आवे तब उस दिन यदि श्रीगुरुदेव विद्यमान हो, तब उनके सन्निकट पहुँचकर विधिवत पूजन करें और यथाशक्ति भेंट द्वारा श्रद्धांजलि अर्पण करें और यदि विद्यमान न हो तो अपने घर पर ही सुन्दर मण्डप बनाकर उसमें श्रीयुगल सरकार का चित्रपट और श्री आद्याचार्य से लेकर वर्तमान श्रीआचार्यचरण पर्यन्त के चित्रपट तथा निज श्रीगुरुदेव का चित्र-पट इन सबको यथास्थान पधारकर ध्यान-स्मरण एवं स्तुति द्वारा सबका विधिवत् शोडषोपचार से पूजन कर भोग धर आरती मंत्र पुष्पांजलि आदि के पश्चात् यथा शक्ति वैष्णव-सेवा करें।

ऋषयश्च हि देवाश्च प्रीयन्ते पितृभिः सह।
पूज्यमानेषु गुरुषु तस्मात्पूज्यतमो गुरुः।।

श्रीगुरुदेव की पूजा करने पर देवता, ऋषिमुनि और पितर प्रसन्न हो जाते हैं। इसलिये श्रीगुरुदेव पूज्यतम है।

-आचार्य पं.सन्तोष कुमार व्यास (देवज्ञ) इन्दौर

भगवान शिव बहुत भोले हैं, यदि कोई भक्त सच्ची श्रद्धा से उन्हें सिर्फ एक लोटा जल भी अर्पित करे तो भी वे प्रसन्न हो जाते हैं, इसीलिए उन्हें भोलेनाथ कहा जाता है। भगवान शिव का माह होता है श्रावण माह। यह माह प्रकृति और देवों के देव महादेव को समर्पित है।

श्रावण में शिवजी की भक्ति का महत्व

हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार यह वही माह है जब समुद्रमंथन हुआ था। समुद्र मंथन में कई दिव्य वस्तुएं निकली और निकला विष, जिसे भगवान शिव ने अपने कंठ में रखकर इस संपूर्ण सृष्टि को बचाया था। जब शिव ने इस विष को अपने कंठ में धारण किया तो उनका कंठ नीला हो गया। इसलिए शिव को नीलकंठेश्वर महादेव भी कहते हैं। विष के प्रभाव को कम करने के लिए सभी देवताओं ने शिवजी को जल अर्पित किया। यही वजह है कि श्रावण मास में शिवजी को जल चढ़ाने का विशेष महत्व है। नीलकंठेश्वर महादेव की पूजा यदि श्रावण माह में की जाए तो व्यक्ति को मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है। वैसे तो श्रावण माह शिव का माह है लेकिन इस माह में प्रकृति भी मेहरबान रहती है। श्रावण माह में प्रकृति भी हरियाली ओढ़ चुकी होती है। श्रावण माह के प्रत्येक सोमवार को भगवान शिव की आराधना करना शुभ माना जाता है।

शिवलिंग का ये रहस्य -जिसमें श्रावण माह के प्रथम सोमवार को कच्चे चावल से, दूसरे सोमवार को तिल से, तीसरे सोमवार को खड़े मूंग से, चौथे सोमवार को जौ से और पांचवे सोमवार को सत्तु अर्पित करना चाहिए। ऐसा करने पर भगवान शिव की कृपा शिवभक्त पर जरूर बरसती है।

श्रावण मास भक्ति के लिए सर्वोत्तम है। इस महीने में जो भी भक्ति भाव के साथ शिवजी की आराधना करता है वह उनक कृपा प्राप्त करता है। मात्र बिल्व पत्र और जलाभिषेक से इस माह में शिव की अनुकंपा प्राप्त की जा सकती है। यह जगत भगवान शिव की ही सृष्टि है। शिव का अर्थ ही है परम कल्याणकारी। वे ऐसे देव हैं जो लय और प्रलय को अपने अधीन किए हैं। शिव ऐसे देव है, जिनमें परस्पर विरोधी भावों का सामंजस्य देखने को मिलता है। वे अर्धनारीश्वर होते हुए भी कामजीत है। देवशयनी ग्यारस के साथ ही जब भगवान विष्णु योगनिद्रा में चले जाते हैं तो शिव सृष्टि के पालनकर्ता की भूमिका संभालते हैं। यही वजह है कि श्रावण में भगवान भोलेनाथ की आराधना की जाती है। उनकी स्तुति से दिशाएं गुंजायमान रहती हैं। जप, तप और व्रत के लिए सर्वोत्तम- इस मास की संपूर्ण कला केवल ब्रह्मा जी ही जानते हैं। इस मास के पूरे तीस दिन जप, तप, व्रत व पुण्य कार्यों के लिए उत्तम माने गए हैं। शिवजी को यह मास सर्वाधिक प्रिय है। वर्षा ऋतु के चार महीनों में भी श्रावण मास में शिवजी की आराधना और स्तुति का विशेष महात्म्य माना गया है। शिव भक्त इस मास में तरह-तरह से भगवान भोलेनाथ को प्रसन्न करने के जतन करते हैं।

भगवान शिव ने स्वयं अपने मुख से ब्रह्मा जी के मानस पुत्र सनतकुमार से कहा कि मुझे १२ महीनों में सावन विशेष प्रिय है। जब सनत कुमारों ने भगवान शिव से पूछा कि उन्हें सावन मास इतना प्रिय क्यों है तो शिव ने बताया कि देवी सती ने जब अपने पिता दक्ष के घर में योगशक्ति के रूप में शरीर त्याग किया था, उससे पहले देवी सती ने महादेव को हर जन्म में पति रूप में पाने का प्रण किया था। अपने दूसरे जन्म में देवी सती ने पार्वती के नाम से हिमाचल

और रानी मैना के घर जन्म लिया। पार्वती ने युवावस्था में एक माह निराहार रहकर कठोर व्रत किया और शिव को प्रसन्न कर उनसे विवाह किया, जिसके बाद से ही यह माह मुझे सभी मास में अत्यंत प्रिय हो गया।

इस महीने में महामृत्युंजय मंत्र, एवं पंचाक्षर और षडाक्षर आदि शिव मंत्रों व नामों का जप विशेष फल देने वाला है। इस पूरे मास जो भी निष्काम भाव से भगवान शिव की भक्ति करता है उसे शिव की कृपा प्राप्त होती है और जीवन के कष्ट दूर होते हैं। यह जगत भगवान शिव की ही सृष्टि है। शिव का अर्थ ही है परम कल्याणकारी। उनके मस्तक पर चंद्र है तो गले में विषधर।

-कु अर्चना प्रकाश मेहता
ग्राम देन्दला जिला शाजापुर म प्र

हे परमात्मा!

सुकून उतना ही देना प्रभु जितने से जिंदगी चल जाए,औकात बस इतनी देना कि औरों का भला हो जाए, रिश्तो में गहराई इतनी हो कि प्यार से निभ जाए, आँखों में शर्म इतनी देना कि बुजुर्गों का मान रख पायें, साँसे पिंजर में इतनी हों कि बस नेक काम कर जाएँ, बाकी उम्र ले लेना कि औरों पर बोझ न बन जाएँ!

वैराग्य की अधिष्ठात्री

माँ नर्मदा

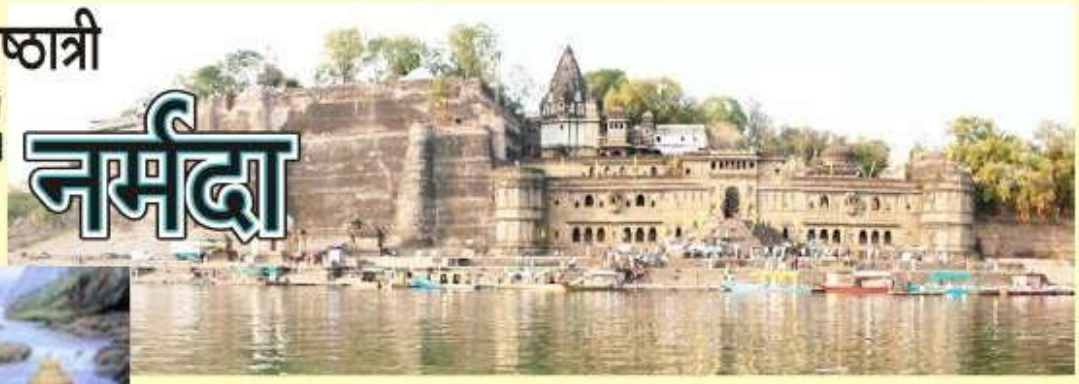

अमरकंटक एक वन प्रदेश है। यह समुद्रतल से 3500 फुट की ऊंचाई पर स्थित है। गंगा को ऋग्वेद यमुना को यजुर्वेद, सरस्वती को अथर्ववेद और नर्मदा को सामवेद। सामवेद कलाओं का प्रतीक है। नर्मदा नदी भारत के मध्य में, पूर्व से पश्चिम की ओर बहने वाली मध्यप्रदेश और गुजरात राज्य की प्रमुख नदी है, जो गंगा के समान पूजनीय है।

महाकाल पर्व के निकट अमरकंटक शिखर से नर्मदा नदी की उत्पत्ति हुई है। नर्मदा के उद्भव से संगम तक 10 करोड़ तीर्थ है। नर्मदा ने भी लोक कलाओं और शिल्प कलाओं को पाला पोसा है। नर्मदा अपने उद्गम स्थल अमरकंटक से निकलकर लगभग 8 किलोमीटर की दूरी पर दुग्ध धारा जल प्रपात तथा 10 किलोमीटर दूरी पर कपिल धारा जल प्रपात बनाती है। मंडला से आगे बढ़ते हुए जबलपुर के पास संगमरमर की गुफाएँ निर्मित करती है यहाँ से बरसते नर्मदा जल से धुआँधार जलप्रपात बनता है।

नर्मदा नदी को मध्यप्रदेश की जीवन रेखा कहा जाता है। नर्मदा को रेवा के नाम से भी जाना जाता है। नर्मदा भारतीय प्रायःद्वीप की सबसे प्रमुख नदी मानी जाती है। विंध्या की पहाड़ियों में बसे अमरकंटक को ही नर्मदा का उद्गम स्थल माना जाता है।

संगमरमर की खूबसूरत संकरी घाटियों से बल खाती नर्मदा नरसिंगपुर, होशंगाबाद की धरती को अभिस्पर्श करती, खंडवा से गुजरते हुए महेश्वर के पास 8 किलोमीटर का सहस्त्र धारा जलप्रपात बनाती है। रास्ते में नर्मदा नदी मंधार तथा दरदी नामक प्रपातों को नयारूप देती है। तत्पश्चात महाराष्ट्र से होती हुई भड़ूच शहर की पश्चिम दिशा में खम्भात की खाड़ी में गिरकर अरब सागर में विलीन हो जाती है। रामायण तथा महाभारत और पारवर्ती ग्रंथों में इस नदी के विषय में अनेक उल्लेख है। कालिदास ने भी नर्मदा को सोमप्रभवा कहा है। इस प्रकार नर्मदा नदी वैराग्य की अधिष्ठात्री मूर्तिमान स्वरूप है।

-अभिजीत व्यास
329, सुन्दर नगर,
सुखलिया, इन्दौर
मो. 9926812068

कहाँ नहीं हूँ

हाँ मैं हूँ
तुम और मुझ में
मुझ में, तुम बनकर
तो.....?
कहाँ नहीं हूँ मैं....
अविरल बहती धारा
सागर और सरिता में
सरिता में गुम हुई...
बहती रहूँगी सागर में...
तो....
कहाँ नहीं हूँ मैं
तिमिर बन रातों में
रोशनी बन उदीप्त करती,
अंधकार को करती दूर
दोनों में विद्यमान सी..
तो.....?
कहां नहीं हूँ मैं...।
तूफान बन विरानों में
शांत चित्त समाई हुई
वन बीच धरा स्थिर...
दोनों में विश्वास अड़िग...
तो....?
कहां नहीं हूं मैं....।
मोती भर सुख लाती
दुःख में नीर बहाती...
अपनों से अपनों की पहचान
यूं करवाती
तो...?
कहाँ नहीं हूँ मैं...।
तपन सूरज की व्यापक
ठण्डक बनी चाँदनी
कभी शीत-ज्वाला बन..
नजर आती यहीं कहीं
तो बोलो...?
कहाँ नहीं हूँ मैं....।
बारिश चंद फुहार बन
महकती हवाओं में
बूंदे मंद-मंद बिखराती
इन्द्र धनुष के रंग दिखाती
तो...?
कहां नहीं हूँ मैं
आसमाँ के रंग नीलों में
धरती के भूरे पन में
मिलन वियोग दर्शाती
ख्वाहिशों को पर देती
तो...?
कहाँ नहीं हूँ मैं....।
जन्मदात्री बनकर भाई...
मृत्यु तक खींच ले जाती मैं
स्नेह बन सदा रहूँगी...
मिट्टी बन समा लूंगी...
अंश मेरे हो...
तो.....?
कहाँ नहीं हूँ मैं...।

उमा मेहता त्रिवेदी
की कलम से...

श्रीरामकथा के अल्पज्ञात दुर्लभ प्रसंग

प्रमुख रामकथाओं में श्री जानकीजी की अग्नि परीक्षा

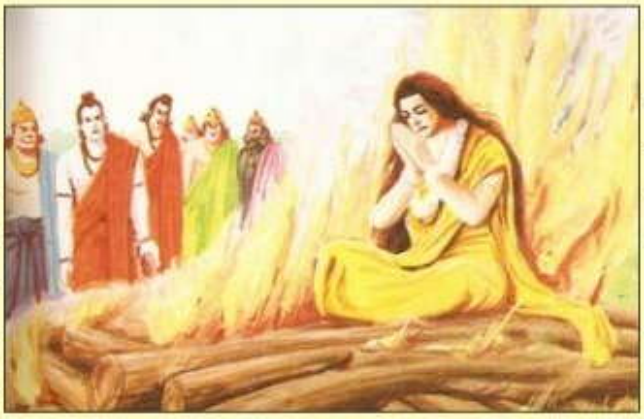

रावण के वध के उपरांत श्रीराम ने लक्ष्मण से कहा - सौम्य अब तुम लंका जाकर विभीषण का राज्याभिषेक करो क्योंकि ये मेरे प्रेमी, भक्त तथा पहले उपकार करने वाले है । लक्ष्मणजी ने स्वर्णघट में समुद्र के जल से विभीषण का वेदोक्त विधि के अनुसार लंका के राजपद पर अभिषेक करा दिया । तत्पश्चात् श्रीराम ने हाथ जोड़कर विनीत भाव से खड़े हुए पर्वताकार वीर हनुमान् जी से कहा - तुम महाराज विभीषण की आज्ञा से लंका नगरी में प्रवेश करके मिथिलेश कुमारी सीता से उनका कुशल समाचार पूछो । साथ ही साथ सीताजी से सुग्रीव और लक्ष्मण सहित मेरा कुशल समाचार निवेदन करो। तुम वैदेही को यह कुशल समाचार सुना दो कि रावण युद्ध में मारा गया । तत्पश्चात् सीताजी का संदेश लेकर लौट आओ। हनुमानजी विभीषण से लंका में प्रवेश करने की आज्ञा मिल जाने पर अशोक वाटिका में गये । हनुमानजी ने अशोक वाटिका में सीताजी को आनन्द शून्य तथा राक्षसियों से घिरी बैठी देखा तथा प्रणाम् करके चुपचाप खड़े हो गये कुछ क्षण पश्चात् सीताजी के सौम्यभाव लक्षित मुख को देखकर हनुमान्जी ने श्रीराम का पूरा संदेश कह दिया। हनुमानजी ने सीता को श्रीराम का संदेश इस प्रकार बताया। '' श्रीराम ने आपको यह संदेश दिया है - हे देवि ! मैंने तुम्हारे उद्धार के लिये जो प्रतिज्ञा की थी उसके लिये निंद्रा त्यागकर अथक प्रयत्न किया और समुद्र में पुल बांधकर रावण के वध के द्वारा उस प्रतिज्ञा को पूर्ण किया।

यह सुनकर सीताजी का हर्ष से गला भर आया। वे कुछ न बोल सकी। हनुमानजी ने सीता को मौन देखकर कहा- आप क्या सोच रही है ? मुझसे बोलती क्यों नहीं ? सीताजी बोली वानर वीर ऐसा प्रिय समाचार सुनाने के कारण मैं तुम्हे कुछ पुरस्कार देना चाहती हूँ किन्तु सोचने पर भी मुझे इसके योग्य कोई वस्तु दिखाई नहीं देती । सोना, चाँदी नाना प्रकार के रत्न अथवा तीनों लोकों का राज्य भी इस प्रिय समाचार की बराबरी नहीं कर सकता। हनुमानजी ने सीता से कहा अब आपकी ओर से मुझे कोई संदेश दें। मैं रधुनाथजी के पास जाऊँगा। सीताजी बोली- भक्तवत्सल स्वामी का दर्शन करना चाहती हूँ। हनुमानजी ने श्रीरामजी के पास पहुँचकर कहा-वे शोक में डूबी रहती है। उनके नेत्र आँसूओं से भरे हुए हैं आपकी विजय का समाचार सुनकर सीताजी आपका दर्शन करना चाहती है। हनुमानजी के ऐसा कहने पर श्रीरामजी सहसा ध्यानस्थ हो गये। उनकी आँखे डबडबा आयीं और विभीषण से कहा-तुम विदेहनन्दिनी सीताजी को मस्तक पर से स्नान कराकर दिव्य अंगराज तथा दिव्य आभूषणों से विभूषित करके शीघ्र मेरे पास ले आओ। श्रीरामजी द्वारा विभीषण को आज्ञा दी गई कि सीताजी को सिर से स्नान करवा के, श्रृंगार किया जावे तथा बहुमूल्य वस्त्र, आभूषण पहनाकर ले आये । शिबिका (पालकी) में बैठ सीताजी आई। विभीषण ने श्रीराम को सीता के आगमन का समाचार दिया। उस समय श्रीराम की मनोदशा इस प्रकार थी-

तामागतामुपश्रुत्य रक्षोगृहचिरोषिताम्।
रोषं हर्षं च दैन्यं च राघवः प्राप शत्रुहा ।।

श्री.वा.रा.युद्धकाण्ड - सर्ग 114-17

राक्षस के घर में बहुत दिनों तक निवास करने के बाद आज सीताजी आयी हैं यह सोच उनके आगमन का समाचार सुनकर शत्रुसूदन रघुनाथजी को एक ही समय रोष, हर्ष और दुःख प्राप्त हुआ। श्रीराम ने कहा कि जानकी शिबिका (पालकी) छोड़कर मेरे पास आये ताकि सभी वानर उनका दर्शन कर सके। इस घटना से लक्ष्मण, सुग्रीव, हनुमानजी बहुत व्यथित हुए। सीताजी जब विनयपूर्वक श्रीराम के समीप खड़ी हुई तब श्रीराम ने अपना हार्दिक अभिप्राय कहना आरम्भ किया। श्रीराम ने कहा अब मेरे अमर्ष का अंत हो गया। मुझ पर जो कलंक लगा था, उसका मैंने मार्जन कर दिया शत्रुजनित अपमान और शत्रु दोनों को एक साथ नष्ट कर दिया है। सीता ! जब तुम आश्रम में अकेली थी, उस समय वह चंचल चित्तवाला राक्षस तुम्हें हर ले गया। यह दोष मेरे ऊपर दैववश प्राप्त हुआ था जिसका मैंने मानव साध्य पुरूषार्थ के द्वारा मार्जन किया। हनुमान तथा सुग्रीव ने सेना सहित पराक्रम किया। जो विजय प्राप्त करने में सहायक हुआ। यह बात सुनते-सुनते श्रीसीताजी के नेत्रों से आँसुओं की धारा बह निकली। श्रीराम का हृदय भी लोकापवाद के भय से विदीर्ण-विदीर्ण सा हो रहा था । श्रीराम ने कहा-मैंने अपने तिरस्कार का बदला चुकाने के लिये मनुष्य का जो कर्तव्य है, वह सब अपनी मानरक्षा की अभिलाषा से रावण का वध करके पूर्ण किया।

-डॉ.नरेन्द्रकुमार मेहता
मानस शिरोमणि एवं विद्यावाचस्पति

वे हंसते हुए संघर्ष करती रही

स्व.श्रीमती कांताबाई नागर
देवलोक गमन 21-6-16

सन् 1971 में घुंसी के सुप्रसिद्ध नागर परिवार पर दोहरा वज्रपान हुआ था, थोड़े से अंतराल में श्री रामस्वरूपजी नागर एवं श्री मनोहरलालजी नागर सगे भाईयों के असामयिक निधन ने पूरे परिवार को हिला कर रख दिया था।

श्री मनोहरलालजी नागर की धर्मपत्नी श्रीमती कांताबाई नागर के ऊपर बच्चों एवं परिवार की जिम्मेदारी आ गई थी, उन्होंने इसे बखूबी निभाया तथा पूरी शिद्दत से संघर्ष किया। 21 जून 2016 को उन्होंने अल्प बीमारी के बाद अंतिम सांस ली। श्रीमती कांताबाई नागर (सुपुत्री स्व.यशोदाबाई मेहता स्व.श्री अनोखीलालजी मेहता, उज्जैन) को अंतिम बिदाई देने हेतु बड़ी संख्या में परिजन, रिश्तेदार एवं समाजजन घुंसी पहुँचे। शोकाकुल परिवार के श्रीमती श्यामादेवी, पं.कमलकिशोर नागर, पं.विमल पं.राजेश्वर, पं.विनोद कुमार, पं.सुनील, पं.सुधीर, पं. सुमित, पं.बृजकिशोर, पं.सुशील, चि.प्रभाकर, चि.हर्ष, चि.पार्थ, चि.श्लोक, चि.गौरांग, चि.कृष्णम, चि.प्रशांत, चि.गोविन्द नागर एवं समस्त परिवार घुंसी, सेमती एवं इन्दौर ने इस विकट घड़ी में सम्बल देने हेतु आए सभी आदरणीय जनों का आभार व्यक्त किया है।

प्रेरणास्पद् व्यक्तित्व के धनी

स्व. श्री शिवदत्तजी झा का निधन दिनांक 25/06/2016

कैसे आकाश मे सूराख नहीं हो सकता।
एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारों।।

कुछ ऐसे ही व्यक्तित्व के धनी थे मेरे श्रद्धेय पिताश्री जिनके सिर से अल्पआयु में ही पिता का साया उठ चुका था। माँ के अलावा कोई देखने वाला न था। माँ भी बहुत ही सरल थी। बहने उम्र में बहुत बड़ी थी जो ससुराल जा चुकी थी पिताश्री ने अपने बूते पर एम.ए. इतिहास तक की शिक्षा हांसिल की व राष्ट्रीय स्तर के फूटबॉल खिलाड़ी होने के कारण जोधपुर से शासकीय शिक्षा का प्रशिक्षण प्राप्त किया व शासकीय शिक्षा की सरकारी नौकरी हांसिल की। उनका विवाह गुजरात के वच्छराजानी परिवार की हेमलता से हुआ। उनसे उनके आठ कन्याओं का जन्म हुआ। लेकिन कभी भी वह निराश नहीं हुए उम्मीद जरूर लड़का होने की थी। परन्तु उन्होने हर कन्या का हंसकर स्वागत किया। और सभी पुत्रियों का लालन पालन बहुत अच्छे से किया और सभी को अच्छी शिक्षा दिलायी और उचित खानदान देखकर सभी पुत्रियों के विवाह किये। कितनी भी विकट परिस्थिति हो उनके मुख पर मुस्कान रहती थी। पिताश्री ने जीवन में कभी हार नहीं मानी। वो सदा जीत के लिए तत्पर रहे। 'जिसकी सोच में आत्म सम्मान की महक है, जिसके इरादों में हौसलों की मिठास है, और जिसकी नियत में सच्चाई का स्वाद है.....उसकी पूरी जिन्दगी ही महकता हुआ गुलाब है। कोटि-कोटि प्रणाम वन्दे मातरम्

-श्रीमती कल्पना मेहता, बांसवाड़ा राजस्थान

षष्टम पुण्य स्मरण

मातुश्री स्व.सुमन नागर (16 जुलाई 2010)

श्रद्धावनत- श्री सुरेश, श्रीमती प्रेमवतीबाई नागर, सौ.सुशीला-राधेश्यामजी नागर, सौ.प्रेमवदा अशोक नागर, सौ.सीमा अभय नागर, सौ.आरती गिरीश नागर, सौ.दीपिका-अभय वैद्य एवं समस्त नागर परिवार भौरांसा

पुण्य स्मरण

स्व.श्रीमती सरस्वतीदेवी शर्मा

21 अगस्त 1996

धर्मपत्नी स्व.श्री लक्ष्मीनारायण शर्मा, माकड़ोन
मुरलीधर शर्मा, महेन्द्र कुमार शर्मा, विजय शर्मा
एवं शर्मा परिवार माकड़ोन
मो. 9926667488, 9424815705

वे कर्म को प्रधानता देते थे

श्री गिरिशचन्द्र पंडया

जो भी मनुष्य इस संसार में आया है उसे एक दिन जाना है यही प्रकृति का नियम है जीवन मिलना भाग्य की बात है और मृत्यु होना समय की बात है। ठीक इसी तरह के थे हमारे पापाजी (ससुरजी स्व.श्री गिरिशचन्द्र पंड्याजी एक स्वतंत्र विचारधारा के व्यक्ति कर्मठ संघर्षपूर्ण जीवन जीने वाले व अपने कर्म को प्रधानता देने वाले एक खुद्दार इन्सान थे। उनका जन्म दि. 28 सितम्बर 1947 को उज्जैन में हुआ था।

मैं 10 वर्ष पूर्व जब इस घर में आई थी तब से ही मैंने पापा को बड़े ही नियम संयम के साथ रहते देखा है छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखना सभी की चिंता करना सारे कार्य समय पर करना उनके स्वभाव में था वे वक्त के भी बहुत पाबंद थे।

प्रतिदिन प्रातः 5 बजे उठना तथा रात में 9 बजे सोने तक अपना सारा कार्य वे समय पर करते थे। भगवान की पूजा हमेशा पापा ही करते थे अगर कई जाना भी होता तो और जल्दी उठकर भगवान की पूजा करते और बड़ी तन्मयता से भगवान की पूजा-पाठ करते। इसके बावजूद समाजसेवा घर में मिलने-जुलने वाले मेहमान सभी के लिए समय निकालकर हर किसी के सुख-दुख में सबसे पहले जाने तथा सबसे बाद में आने वाले व्यक्ति थे। कितनी भी धूप क्यों न हो पर पैदल चलकर बिजली का बिल भरना व घर के अन्य कार्य करना हमेशा कुछ न कुछ काम करते रहना उनके स्वभाव में थे। पेपर को तारीख अनुसार जमाकर रखना व कोई फाईल या कोई भी पुराना कागज बड़ा संभालकर रखते थे कोई भी उनसे कुछ मांगता तो तुरंत निकालकर बता देते थे। यहाँ तक की 20 साल पुराना रिकार्ड भी उनके पास रहता था। हाल ही में हाटकेश्वर जयंती के अवसर पर नागर समाज में उनका सम्मान भी किया गया था। सिंहस्थ पर्व पर भी जब घूम-फिर सारे स्नान पर्व किए अपने पूरे जीवनकाल में कभी बीमार भी ना रहे। पेड़-पौधों को पानी डालना उनका रोज का कार्य था। पर उस दिन पेड़-पौधों को पानी डालकर नीचे आये तो एकदम से उनके पूरे बदन में दर्द उठा हमें लगा कि सिंहस्थ में घूमे-फिरे इस वजह से थकान या लू लगी होगी, तुरन्त डॉक्टर के पास ले गये, दवाई-गोली करवाई डॉक्टर ने भी यही कहा लू लगी है। चिंता की बात नहीं है। ऐसे ही तीन दिन बीत गये व चौथे दिन फिर उन्हें पूरे बदन में दर्द उठा तो हम सुबह 6 बजे पुष्पा-मिशन ले गये। वहाँ डॉक्टर ने ईसीजी करवाया तो पता चला कि मेजर अटेक आया है, तुरन्त इलाज शुरु किया गया। सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा था। डॉक्टर ने भी कहा चिन्ता की बात नहीं है पर अचानक उसी दिन शाम 4.30 बजे अपने शरीर का त्याग कर दिया। उस दिन 19 मई वेशाख तेरस प्रदोष थी। उस दिन वक्त की ऐसी मार हमारे पंड्या परिवार पर पड़ी, जिससे उभरना बहुत मुश्किल है। पापाजी अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर हमेशा के लिए चले गये।

-श्रीमती निधि पुरुषार्थ पंड्या
सी-11/3, ऋषि नगर, उज्जैन
फोन 0734-2517824, मो. 9824016626

छठवाँ निर्वाण दिवस श्रीमती कांतादेवी नागर

महाप्रयाण 13 अगस्त 2010
श्रद्धावनत- उत्कर्ष, जितेन्द्र, दीपिका, कु.टीशा, ओमप्रकाश एवं समस्त नागर परिवार, देवास
मो. 9827678692

24वाँ पुण्य स्मरण श्रीमती संध्या पी.जोशी (1 अगस्त 2016)

सेवाव्रती, परोपकार, परहित, हंसमुख, समर्पित, व्यवहार कुशल, स्मृति क्षणों में भीगी पलकों के साथ
जोशी, जया नागर, जाधव, तिवारी, शर्मा परिवार, इन्दौर, महू, राऊ -पी.आर.जोशी इन्दौर

97वीं जमना जयंती, विगत वर्ष अनन्त यात्री
श्रीमती जमनादेवी, नवनीतलाल व्यास (नागर)

स्मरण जीवंत बना रहे कृष्णकांत व्यास, मंदसौर
शरद, मुकुल नागर, उदयपुर
जोशी, श्रीमती जया नागर, जाधव, तिवारी परिवार महू, इन्दौर

प्रेषक- पी.आर.जोशी, इन्दौर

जो भाग्य में है वह भाग कर आएगा...
जो नहीं है वह आकर भी भाग जाएगा...

जिंदगी उसी को आज़माती है,
जो हर मोड़ पर चलना जानता है....
कुछ पाकर तो हर कोई मुस्कुराता है
जिंदगी उसी की होती है
जो सब खोकर भी
मुस्कुराना जानता है...

RYDAK®

(RED)

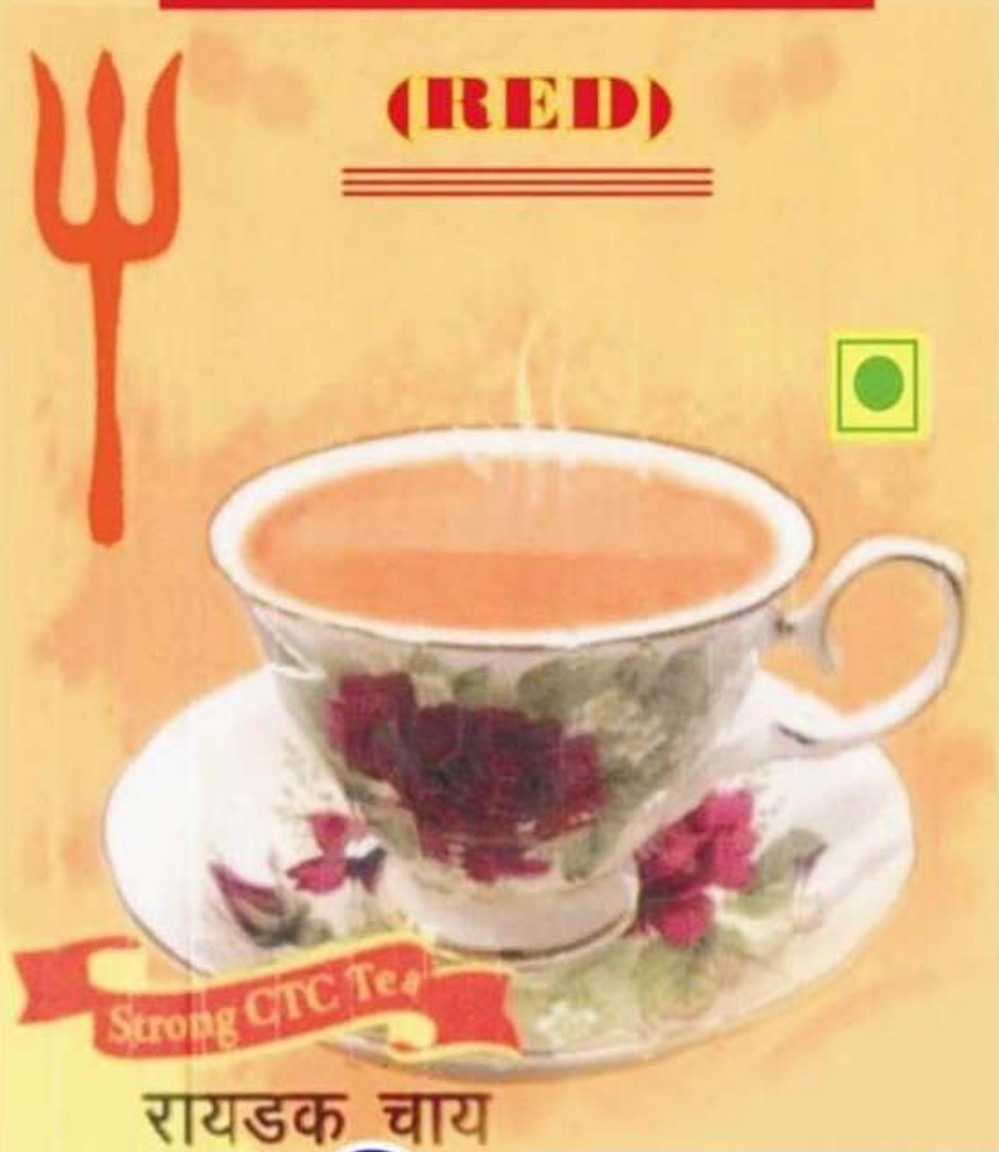

रायडक चाय

कड़क स्वादिष्ट रायडक चाय

Marketed By : KANT & COMPANY LTD.

71, DR. RAJENDRA PRASAD SARANI, KOLKATA - 700001, PH.NO. 22309925

Local Address-

KANT & COMPANY LIMITED

306. Nariman Point. 96. Maharani Road. INDORE Mo.9300126194

मालव माटी के गौरव, गोभक्त

पं. श्री कमलकिशोरजी नागर

को जन्माष्टमी के अवसर पर जन्मदिन की बधाई

श्री हाटकेश्वर धाम

मांगलिक कार्यक्रम, यात्रियों एवं बस यात्रियों के ठहरने की उत्तम व्यवस्था/एसी एवं नॉन एसी कमरे उपलब्ध

नागर ब्राह्मण हाटकेश्वर मंदिर न्यास
82, रामघाट मार्ग, हरसिद्धि की पाल,
उज्जैन फोन 0734-2584599

अपूर्वा शर्मा

(पुत्री-पीयूष शर्मा, निवासी कोटा)

(जन्म तिथि 16.12.1991) ने सन् 2014 में IIIT Allahabad से B.Tech (IT)2014 8.81 Pointer से उत्तीर्ण किया है। शिक्षा के क्षेत्र मे सदैव अव्वल रही अपूर्वा जुलाई 2015 से बैंगलौर में कार्यरत है। मै स्वयं बतौर पी.ए. शासकीय सेवारत हूं एवं मेरी धर्मपत्नि पोस्ट ग्रेज्युएट होकर सफल गृहिणी है। हम दशोरा ब्राह्मण है, एवं अपूर्वा मेरी इकलौती संतान है। अन्य जानकारी के लिए आपके फोन कॉल का स्वागत है।

पीयूष शर्मा
बी-10, समृद्धि नगर
स्पेशल बारां रोड, कोटा-324001
मो. 09214857557

कु.निहारिका व्यास

सुपुत्री– सौ.जया–राहुल व्यास

1 अगस्त 2016

शुभाकांक्षी

सौ.शान्तादेवी–भैरुलाल, सौ.दुर्गा–राजेन्द्र व्यास
दिनेश व्यास, व्यास परिवार, मड़ावदा
नानाजी–नानीजी : सौ.कल्पना–मणीशंकर नागर
नागर परिवार करनावद–देवास

बधाई कर्ता **व्यास फोटो स्टुडियो**, मड़ावदा (अतुल व्यास)
मो. 9981394279, 9770201020

जन्मदिवस पर बधाईयाँ

प्रिशा

(चुन्नु)

सुपुत्री-डॉ.पियुष-पुर्णिमा व्यास

29 अगस्त

शुभेच्छु :
व्यास परिवार, भोपाल
नागर परिवार जयपुर

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक मनीष शर्मा द्वारा शिवप्रभा प्रिंटर्स एण्ड ग्राफिक्स, 20, जूनी कसेरा बाखल, इन्दौर से मुद्रित एवं यहीं से प्रकाशित
सम्पादक : सौ.संगीता शर्मा

LATE POSTING